चन्दामामा

दिसम्बर १९६५

For the first time in India the revolutionary electronic engraving machine in action

VARIO KLISCHO GRAPH

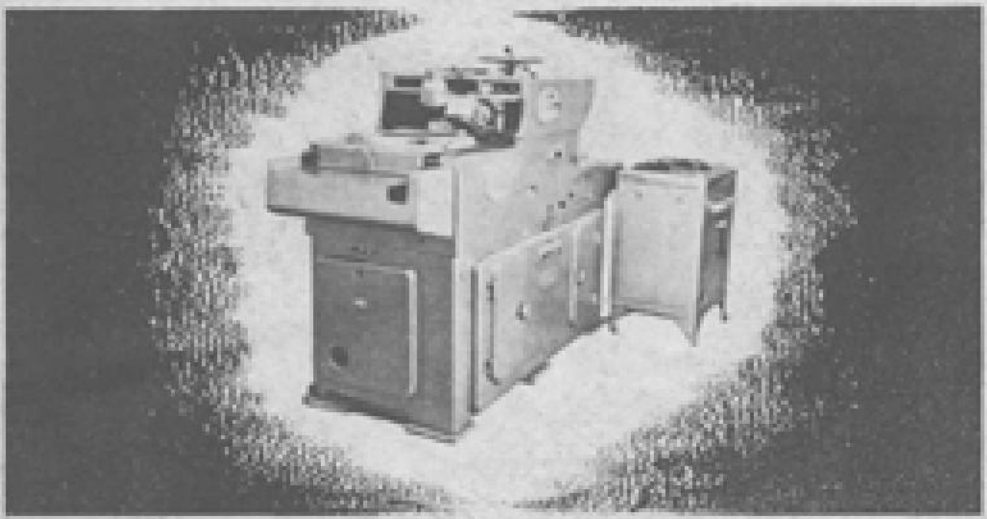

WHAT IT MEANS TO YOU

Block making time reduced from days to a few hours • Electronic control of gradation and detail sharpness • Electronic adjustment of colour correction

CHANDAMAMA PRESS - CHANDAMAMA BUILDINGS - MADRAS-26

दुधमुँहे
बच्चों के लिये
डाबर
की नई देन.....

डाबर
जन्मघूँटी

डाबर

(डा० एस० के० बर्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२६

एकतुल्य निवास और स्वादिष्ट भोजन के लिए

न्यू माड़र्न होटल

शाकाहारी - बोर्डिंग - लॉजिंग - रेस्टोरेंट

डायमनहड रोड़, विम्बेश्वरपुर, बेन्गलोर - ४.

(मिनर्वा सर्कल के समीप)

कमरे सुन्दर रूप से सज्जित, दिन रात चलता ठंडा और गरम पानी

डिनर और टी पार्टी के लिए विशेष कमरे भी हैं।

फोन: ७२८४९ और २७१६०

अल्बो-सांग

सभी उम्र के लिए एक आदर्श टॉनिक

एसे साफ रखने के लिए आपको अल्बो-सांग की जरूरत पड़ेगी। क्यों कि अल्बो-सांग में ऐसे विशेष तत्व होते हैं जो घुमाने और पीसी के दांतों को साफ रखते हैं। अल्बो-सांग आज ही खरीदिये, सब रोग कीटाणु और दांत दर्दको साफ कर देंगे।

जे. एण्ड जे. डीशेन

बेंगलोर (सी. ए.)

२५ से अधिक वर्षों से लोकप्रिय
Asha
आशा स्नो, फेस पाउडर, काजल तथा अन्य सौंदर्य प्रसाधन

दिलीप और साथी

मेले में !

वाह! यह तो बिलकुल जन्नत जैसा है।
चलो, उस बिंदा चाची की दुकान चलें।
झूले से देखकर यह क्या है।
झूले में बैठने का मजा है।
चलो, हम भी झूलें।
पैसा दो एक एक आदमी और झूले में बैठाओ, फिर तब तो चाची का भाई बिंदा आए।
देखा बादशाह अकबर घोड़ा दौड़ा रहा है।
और यह तो है—बिल्ली ऐसे के साथ दुम तोड़ रही है।
अरे यह क्या! बड़ी दुम!
झूले से दुम दिखाई दी नहीं देता!
यह क्या दौड़ रहा है!
अच्छा छोड़ो, अब तो झूले का मजा 'फ्लोरी' टार्च दिखाने में!
ये सीधे सीधे चलके—इसे क्या है क्या देख लूँगा बाद चाहिये!
चलो अंदर बाद में आ जाये!
बिंदा
आखिर है अपने 'फ्लोरी' टार्च के कौशल से इस चोरों के उजाले में आ जाये!

LIFEBUOY
for health
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ
हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

सारे परिवार के स्वास्थ के लिये फॉसफोमिन

फॉसफोमिन हिप्नोन की कार्यक्षमता तथा कैल्शियम लिसरोफॉसफेट से युक्त एक उत्कृष्ट टॉनिक है जो आपके परिवारको बलवान युवा और स्वस्थ रखेगा। फॉसफोमिन के सेवनसे थकावट और कमजोरी का नामोनिशान नहीं रहेगा। फॉसफोमिन अकालटको मिटाता है। मुक थकावा है। आन्तरिक बल बढ़ाता है। शरीर को बलवान बनाता है। हर घर के स्वास्थके हिप्नोन टॉनिक... फॉसफोमिन से आपके सारे परिवारका स्वास्थ बना रहेगा।

A century of experience builds faith

साठे

बिस्कुट

इतने लाजिज़ कि पता चुकिए ही नहीं।

अमृतांजन

मलिये और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक विश्लेषणों १० दशकों की एक दवा है—सीने के कफ और जकड़न के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, दमनकारी है। अमृतांजन न्यूरेल्जियों के दर्द, सिरदर्द और जोड़ के दर्द में भी तुरंत राहत पहुँचाता है। एक बात हमेशा याद रखिये कि दशकों एक ही शीशी खाली पर ये महीनों चलेगी। अमृतांजन की एक शीशी बाजार जाने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिलों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दशाब्दों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2070A

चन्दामामा

संपादक: चक्रपाणी

जो कहानियाँ हम "चन्दामामा" में देते हैं, उनको शिक्षाप्रद बनाने का हमारा बराबर प्रयत्न रहता है।

शारीरिक बल अपने आप में काफी नहीं है। उसके अनुपात में बौद्धिक बल भी आवश्यक है। यह "परमवीर" कहानी निरूपित करती है।

पर इन दोनों बलों से बड़ा बल है, संकल्प बल। आज जब कि हमारा देश संकट का सामना कर रहा है, इस संकल्प बल को हमें और बढ़ाना होगा। संकल्प हो, तो सफलता हमारी है।

वर्ष: १७ दिसम्बर १९९५ अंक: ४

औरंगजेब का पट्टाभिषेक दो बार हुआ।

एक बार आगरा को जीतने से, २१ जुलाई १६५८ से फिर जून १६५९ में। इस बीच उसने अपने शत्रुओं का सफाया कर दिया। जनवरी ५, १६५९ में मुराद, अलहाबाद के पास खजुहा में बुरी तरह हरा दिया गया। मीर जुमला ने उसे अरकान तक खदेड़ दिया। फिर उसका किसी को पता न लगा। दारा शिकोह दिल्ली से लाहौर भागा। वहां से मुलतान पहुंचा। वहां से गुजरात खदेड़ा गया। फिर अजमेर से चार मील दूर देवराय के पास तीन रोज औरंगजेब की सेनाओं से लड़ा और हरा दिया गया। उसे भारत में कहीं कोई मदद न मिली। सरहद की ओर भागा जा रहा था कि रास्ते में उसकी पत्नी नादिरा बेगम गुजर गई। अफगान के जमींदार ने, जिसे वह अपना साथी समझता आया था, उसे धोखा दे दिया। फिर वह औरंगजेब के नौकर बहादुर खान द्वारा पकड़ा गया। अगस्त ३०, १६५९ को मरवा दिया गया।

औरंगजेब "आलमगीर"—यानि "संसार विजेता" की उपाधि से गद्दी पर आया। वह मुगल साम्राज्य जो दो सौ वर्षों से बढ़ता आया था, उसके समय में और भी विस्तृत हुआ। उसके कर्मचारियों ने उसके लिए नये नये राज्य जीते। बिहार के गवर्नर दाऊद खान ने १६६१ में पलामौ जीतकर दिया। बंगाल के गवर्नर मीर जुमला ने अहोम पर आक्रमण किया। अहोम, मंगोल जाति के थे। वे १३ वीं सदी में उत्तर बर्मा से ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी में आये। धीरे धीरे उन्होंने अपने

राज्य का विस्तार किया। हिन्दू धर्म स्वीकार करके वे वहीं बस गये।

मीर जुमला १६६१ नवम्बर में बड़ी सेना के साथ निकला। कूच बिहार और आसाम, जो अहोमों के अधीन थे, जीता। १७ मार्च १६६२ में वह अहोम की राजधानी गढ़गाँव पहुँचा। मीर जुमला को शत्रुओं की अपेक्षा प्रकृति से अधिक लड़ना पड़ा। आखिर उसने विजय प्राप्त की। अहोम के राजा जयध्वज ने सन्धि कर ली। हरजाना और हर साल कर देने के लिए मान गया। मीर जुमला इस विजय का कोई लाभ न उठा सका, क्योंकि १६६३ मार्च ३० को जब वह ढाका वापिस आ रहा था, वह मर गया। अहोम ने कामरूप राज्य पर फिर कब्जा कर लिया।

मीर जुमला की जगह बेन्गाल का गवर्नर शैस्तखान था। वह औरन्गजेब के मामा का लड़का था। वह इस पद पर करीब १० वर्ष रहा और उसने पोर्तुगीज समुद्री डाकुओं को सजा दी।

औरन्गजेब के लिए देश का पश्चिम भाग एक समस्या बन गया। वहाँ की अफगान जातियाँ बड़ी ताकतवर थीं। मुगि

बेदखल थी, इसलिए वे गिरोहों में, पंजाब में आते और वहाँ के शहरों को लूटते। पहिले औरन्गजेब ने धन देकर उन्हें शान्त करना चाहा, पर वे पहाड़ी जातियाँ न मानीं। १६६७ आरम्भ में मामू के नेतृत्व में युसुफ जातियों ने बगावत शुरू कर दी। उनके गिरोहों ने हजरा जिला, पश्चिम पेशावर, अटक आदि पर आक्रमण किया। यह बगावत शान्त कर दी गई। १६७२ में अकमल खान के नेतृत्व में अफरीदियों ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया। अकमल खान ने अपने को पठान

सुल्तान घोषित कर दिया और पठानों को, उसने राष्ट्रीय युद्ध के लिए उकसाया। मुगलों ने उससे युद्ध किया, पर वे हरा दिये गये।

अकबर खान की ख्याति बढ़ी। अटक और कन्धार के बीच रहनेवाले पठान युद्ध के लिए तैयार हो गये। यूसुफ जाति के अफगान, अफरीदियों से मिल गये। उनका नेता खुशहाल खान बड़ा कवि था। उसने अपनी कलम और तलवार से अपने साथियों को राष्ट्रीय युद्ध के लिए उद्बोधित किया। १६७४ में अफगानों का मुगल सेना के साथ मुकाबला हुआ। इस युद्ध में मुगल सेनापति शुजाबत खान मारा गया।

इसके बाद औरंगजेब चेता। उसने सोचा कि सरहद पर मुगलों की प्रतिष्ठा को दृढ़ बनाने के लिए और सख्त कार्यवाही की जरूरत थी। १६७४ जुलाई में वह पेशावर पहुंच गया। अपनी राजनीति में ईनाम और पेन्शन, खिताब और जागीर देकर, उन सबको वश में किया, जो इस तरह वश में आ सकते थे और जो नहीं आये, उनको उसने लड़कर निर्मूल कर दिया। "फूट और शासन" की इस नीति की सफलता में, अफगानिस्तान के गवर्नर अमीरखान और उसकी पत्नी साहिबजी की सलाह ने औरंगजेब की बड़ी मदद की। इस नीति को औरंगजेब "दो हड्डियों को एक दूसरे से मारना और दोनों को तोड़ देना" कहा करता था।

मुगल सराय में जीत तो गये, पर उनकी वहां बहुत-सी सेना मारी गई। शिवाजी की विजय परम्परा का यह भी कुछ असर था—आखिर इससे मुगलों को अधिक हानि ही हुई।

नेहरू की कथा

[१७]

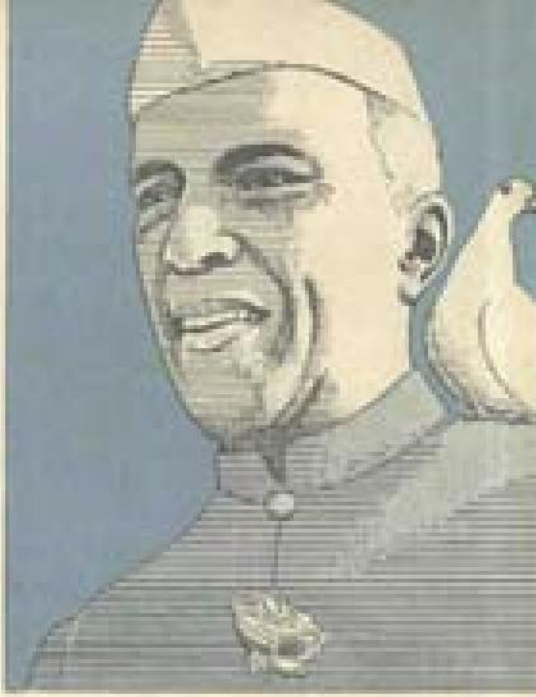

जवाहर जेल से रिहा होने के छः मास सप्ताह बाद फिर गिरफ्तार कर लिये गये। हुआ ऐसा कि अलाहाबाद के कपड़े के व्यापारियों ने मिलकर एक संघ बनाया और उन्होंने निश्चय किया कि वे कपड़े का आयात नहीं करेंगे। जो कोई इस निश्चय के खिलाफ कुछ करता, उसे जुरमाना देना होता। परन्तु कई व्यापारी इस निश्चय का उल्लंघन करके, विदेशी कपड़ा बेचने लगे। जेल से छूटने के बाद, खादी का प्रचार और विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के लिए नेहरू आन्दोलन कर रहे थे। उन्होंने उन व्यापारियों से कहकर देखा। जब उन पर कोई असर न हुआ, तो उन्होंने पेकेटिन्ग करने का निश्चय किया। सुनते उन सब व्यापारियों ने जुरमाना दे दिया, यह जुरमाना उनके संघ को ही मिला।

फिर भी सरकारी अधिकारियों ने जवाहर पर तीन अपराध थोपे...एक था, लोगों को इकट्ठा, दूसरा, उनसे पैसा लेना, तीसरा, देशद्रोह। जवाहर ने अपनी सिफ़ाई तो नहीं दी। पर उन्होंने अपने एक बयान में यूं कहा—"प्रेम और सिद्धान्त हृदय में आते हैं, वे बाजार में नहीं बिकते। उकसाकर, उनको नहीं पा सकते! हम अपने देश की स्वतन्त्रता और सिद्धान्तों के लिए लड़ रहे हैं। मैं खुशी खुशी फिर एक और जेल यात्रा पर जाऊँगा। भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ना तो अपने आप में बड़ा काम है, गान्धीजी के नेतृत्व में यह करना तो और भी बड़ी बात है। जिस देश को उठाने में और बड़ा

भाग्य क्या हो सकता है! अपने स्वप्नों को साकार करने के लिए प्राणों को न्योछावर कर देना क्या गलती है!"

जवाहर को १८ महीने की सजा हुई और उनको अलमोड़ा जेल भेज दिया गया। तब तक जेल में कई परिवर्तन हो गये थे। बीसीवाली बैरीताल जेल भेज दिये गये थे।

जिस बैरेक में जवाहरजी को रखा गया था, उसमें पचास कैदी थे। बाहर स्नान करना, कपड़े धोना, उन्हें बुरा न लगता। एकान्त में रहने के लिए, वे कैद से बाहर लेटकर बादलों को देखा करते। जब वे बाहर न देखा करते, तो पढ़ा करते। हमेशा जवाहर को पढ़ता देख, सुपरिटेन्डेन्ट ने कहा—"पुस्तकों के पढ़ने में क्या आनन्द है! मैंने तो बारहवें वर्ष में ही पुस्तकों को नमस्ते कर दी थी।" जवाहर ने सोचा, क्योंकि उसने पुस्तकें पढ़कर अपना दिमाग खराब नहीं किया था, इसलिए ही वह यू.पी. में जेलों का इन्सपेक्टर बन पाया था।

जेल में चाबन्दियाँ अधिक होने लगीं। जो चिट्ठियाँ आतीं, उन्हें महीने में एक बार ही दिया जाता। एक दिन ही बाहर से आये हुए लोगों से मिलने दिया जाता। अखबारों को तो मँगाने न दिया जाता। जो कैदियों में अफवाहें उड़तीं, वे ही खबरें थीं। ऐसी हालत में कैदी और जेल के अधिकारियों में झगड़ा हुआ। यह निर्धारित करके कि सारी गड़बड़ी के सात व्यक्ति मुख्य कारक थे, उनको अलग छोटी जगह में रख दिया गया। इन सातों में जवाहरलाल जी के साथ गान्धीजी के लड़के, देवदास महादेव देसाई, पुरुषोत्तमदास टण्डन, और बालकृष्ण शर्मा भी थे।

यह परिवर्तन जवाहरलालजी के लिए अनुकूल ही था। अब भीड़ तू थी। रोज व्यायाम के लिए कैद के चारों ओर भागना, पौधे बोना, देखना, सूत कातना, निर्मल आकाश में तारे देखना, उनको देखकर, पुराने मित्रों की तरह रोज दीखने पर भी आनन्दित होना, उनकी दिनचर्या हो गई। इस प्रकार सप्ताह और महीने गुजर गये।

मोतीलालजी और जवाहरलालजी पर लगाये जुरमाने के वसूली के लिए, पोलीस प्रायः आनन्द भवन आया करती। जुरमाना देना, कानमेस के नियमों के विरुद्ध था। पोलीसवाले इसलिए घर की चीजें जब्त करके ले जाया करते। इन्दिरा छोटी लड़की थी। पोलीस से झगड़ा करती।

इन दिनों जेलों में अपराधियों को सताया जाता, ताकि वे जेल की जिन्दगी से घबरा जावें। परन्तु उनको न सुधारा जाता, न उन्हें कोई रोजी रोटी का रास्ता ही दिखाया जाता। राजकीय कैदियों और मामूली कैदियों में, कोई भेद न किया जाता। राजकीय कैदी क्योंकि शिक्षित थे, इसलिए वे कैद का अत्याचार सहन न कर पाये। यदि वे जेल के किसी नियम का उल्लंघन करते, तो जेल के अधिकारी उनको बुरी तरह सजा देते। इस तरह के उल्लंघन के कारण, आजाद नाम के १५, १६ साल के लड़के को कोड़ों की सजा दी गई। यह लड़का जब तक बेहोश न हो गया, हर कोड़े के साथ "महात्मा गान्धी" चिल्लाता गया। फिर वह लड़का क्रान्तिकारियों में शामिल हो गया।

गान्धी जी की गिरफ्तारी के बाद कानमेस दो दलों में बँट गई। मोतीलाल और देशबन्धु दास के नेतृत्व में कुछ ने परिवर्तन चाहा। प्रान्तों में और केन्द्र में

को शासन सभायें बनने जा रही थी और उनके लिए जो चुनाव होनेवाले थे, कांग्रेस को भाग लेकर, उनमें बहुमत प्राप्त करना चाहिये, यह इस वर्ग का अभिप्राय था। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने इसका विरोध किया और कहा कि कांग्रेस को शासन का पिक्षरण जारी रखना चाहिये। जवाहर इस वर्ग के थे। एक बार और पिता और पुत्र में मतभेद हुआ।

जेल जीवन में बहुत-सी कमियाँ थीं। औरतों की आवाज, बच्चों का हँसना नहीं सुनाई देता था। जवाहर को एक बात याद आई कि उन्होंने आठ दस महीने से फूले का झोंका नहीं पूंघा था। ऐसी जेल में, ३१ जनवरी १९२३ को सब राजनैतिक कैदियों को एकाएक छोड़ दिया गया।

दुआ यह था कि प्रान्तीय विधान सभाओं ने राजनैतिक कैदियों को छोड़ने का प्रस्ताव पास कर दिया था। सरकार प्रायः ऐसे प्रस्तावों पर ध्यान नहीं देती थी, पर इस बार उसने राजनैतिक कैदियों को छोड़ना ही अच्छा समझा। सरदार के विरुद्ध तब कांग्रेस कुछ भी न कर रही थी। कांग्रेसी आपस में कट झगड़ रहे थे। १९२० में और २१ के शुरू में जिस जिस को सजा मिली थी, प्रायः वे सभी छोड़ दिये गये थे। जेल में कांग्रेस के नेता कम ही रह गये थे।

दूसरी बार छूटने के पहिले, जवाहरलाल नेहरू ने पहिली बार अपना जन्मदिवस १५ नवम्बर १९२२ जेल में मनाया। उसके बाद, तो कई बार उन्होंने यह जन्मदिवस जेल में मनाया।

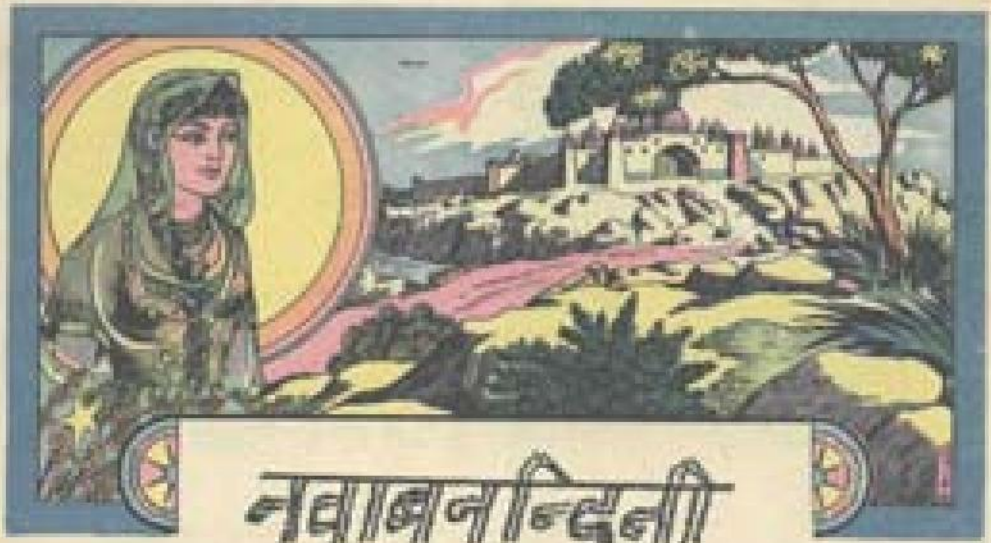

नवाबनन्दिनी

[४]

अब पठान उड़ीसा में, स्वर्ण दुर्ग को राजधानी बनाकर, आराम से समय व्यतीत कर रहे थे। कतलूखान के बाद, सुलेमानखान और उस्मानखान को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर, वृद्ध बंगाल ईसाखान पर राज्य शासन का भार डालकर मानसिंह चला गया था।

सुलेमानखान और उस्मानखान में, जो नवाब माने जा रहे थे, बड़ा अन्तर था। सुलेमानखान सिध्दहस्त और भोग विलासी था। उस्मानखान का स्वभाव वीरोचित था। पठान राजवंश में पैदा होकर, किसी का भोग विलास में समय व्यर्थ करना, उसको बहुत बुरा लगता था। उस्मानखान को भारत में मुगलों का शासन ही गँवारा न था। बाबर के समय में, पठानों का साम्राज्य मुगलों के हाथ जा चुका था। कौन कह सकता था कि वह साम्राज्य पठान फिर नहीं पा सकते थे! उस्मान को वह सुलह भी पसन्द न थी, जो शाह में हुई थी। क्या ऐसी सन्धियाँ स्थाई हैं!

उस्मान के मन में अपमान की चिन्ता की कारण थी। वह उसे बहुत चाहता था। अपमान कतलूखान की अपनी लड़की न

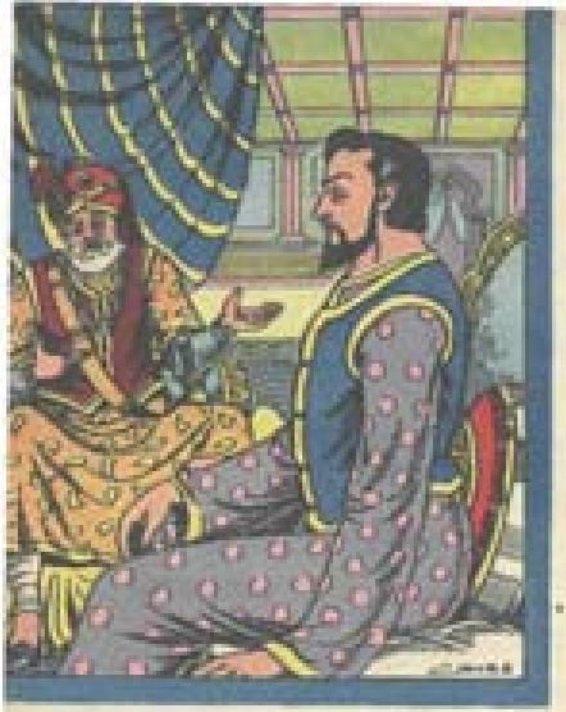

थी, गोद ली हुई थी। फतहखान की एक कश्मीर बेगम के बड़े भाई की लड़की थी जमाखा। जमाखा छः महीने की ही थी कि उसकी माँ गुजर गई थी। उसके पिता ने उसको अपनी छोटी बहिन को सौंपा। इसके कुछ दिनों बाद, वह भी गुजर गया। तब से जमाखा का, फतहखान की अपनी लड़की की तरह पालन पोषण हुआ—बल्कि वह उससे भी अधिक लाड़-प्यार से पाली गई। चूँकि फतहखान ने उसको जितना धन दिया था, अपने लड़कों को भी न दिया था।

जमाखा और उस्मान की एक ही उम्र थी। दोनों मिल-जुलकर बड़े हुए थे। शुरुआत का प्यार, बड़े होकर, उस्मान में प्रेम के रूप में जगा। पर जमाखा उसको अपना भाई ही समझती, उससे स्नेह करती रही। जब से उस्मान को मालूम हुआ था कि वह उसे न प्रेम करके, जगतसिंह से प्रेम कर रही थी उसे उसकी प्रेम अग्नि, मन ही मन जला रही थी।

एक दिन शाम को उस्मानखान एक बड़े कमरे में बैठा था कि वहाँ बूढ़ा कबीर ईसाखान आया। दोनों की औपचारिक बातों के खतम हो जाने के बाद, उस्मान खान ने कबीर से पूछा—"किस काम पर आये हैं?"

"आपने सुना होगा कि जगतसिंह को कैद की सजा दी गई है।" कबीर ने कहा।

"हाँ, सुना तो है, परन्तु उससे हमारा क्या बनने बिगड़नेवाला है?" उस्मान ने पूछा।

"मालूम हुआ है कि मानसिंह महाराज ने जो हमसे सन्धि की थी, वह बादशाह अकबर को नहीं पसन्द आई। इसलिए

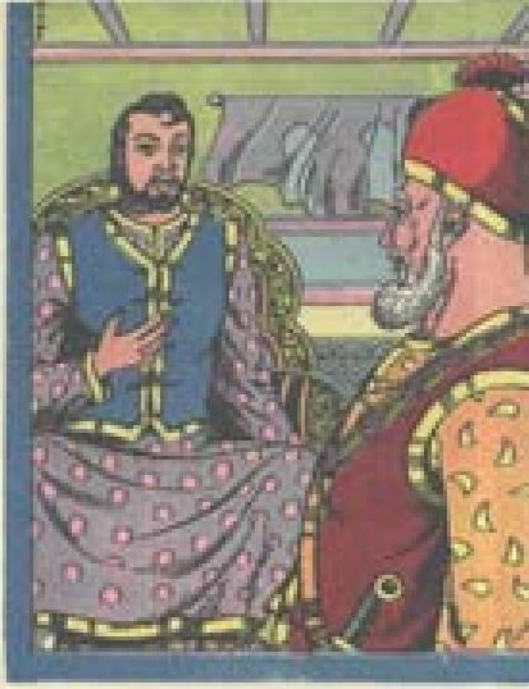

बादशाह कोई बहाना करके, उसे रद्द कर सकता है।"

"इसका जगतसिंह की सजा के साथ क्या ताल्लुक है?"

"मेरे ख्याल में ताल्लुक है। पहिले की तरह जगतसिंह हमारा परम शत्रु नहीं है। मेरा ऐसा ख्याल है कि उसके मन में हम लोगों के बारे में कुछ लिहाज हो सकता है।" वजीर ने कहा।

उस्मान जान गया कि बूढ़ा वजीर घुमा फिराकर जयशा की ओर इशारा कर रहा था। वजीर का मतलब था, चूँकि जगतसिंह जयशा से प्रेम कर रहा था, इसलिए उसके मन में पठानों से दुश्मनी रखने का ख्याल न होगा। यह जानते ही उस्मान को ऐसा लगा, जैसे उसे बिच्छुओं ने डस लिया हो।

"आपके कहने का क्या यह मतलब है कि जगतसिंह हमारी भलाई को ध्यान में रखते हुए अकबर बादशाह से कहकर, यह सन्धि रद्द न करने देगा?"

"हाँ...." वजीर ने कहा।

"इस सन्धि को आप क्यों इतना अच्छा समझ रहे हैं? इससे हमारा क्या लाभ हुआ है? हमने करीब करीब बंगाल जीत लिया था, अब हम उसे खो बैठे हैं, पूरी बगावत भी हम मुगलों को दे चुके हैं। अकबर ने यह सन्धि रद्द भी कर दी तो हमें कोई झिझक करने की जरूरत नहीं है।" उस्मान ने कहा।

वजीर ने कुछ सोचकर कहा—"मैं इसके बारे में आपसे बात नहीं करना चाहता। यह कहना चाहूँगा कि इस समय हम बहुत कमजोर हैं।"

"सच है। मानसिंह का मुकाबला करनेवाला अब हम लोगों में कोई नहीं

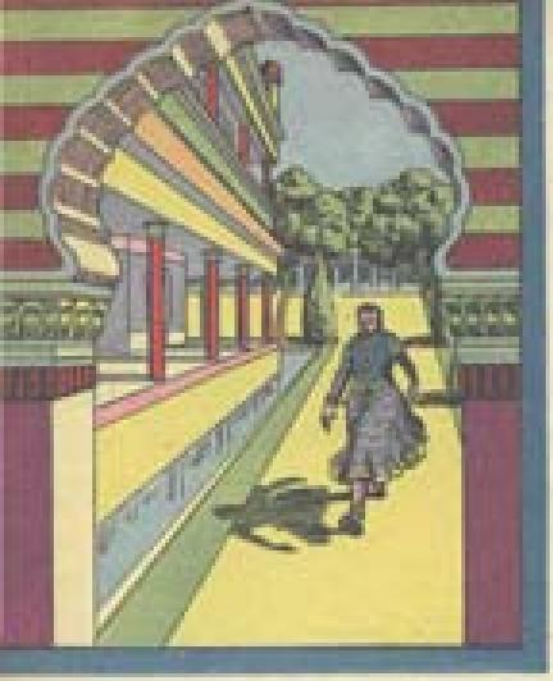

रहा। अब इसके बारे में कोई उपाय कर सकते हैं।"

"मेरा समय तो रोजमर्रे के शासन कार्य में चला जाता है।"

"आप उन्हें ही देखते रहिये। अब इस उम्र में युद्ध की बातों में नहीं पड़ सकते। इस उम्र में आदमी शान्ति और सन्धि ही चाहता है। यह सन्धि भले ही आपको अच्छी लगे, पर वस्तुतः भयानकजनक ही है। मैं इसे रद्द करके, मुगलों से युद्ध करना चाहता हूँ। उसके लिए आवश्यक मसल करके, आपको बताऊँगा।" उस्मान ने कहा।

"एक और बात, जल्दी ही मानसिंह पुरी अमलदार की यात्रा के लिए आ रहे हैं। वे हमारे राज्य में से ही गुजरेंगे। इस सिलसिले में हमें उनकी यात्रा सफल करनी होगी।" कबीर ने कहा।

उस्मान ने रोष में कहा—"असम्भव!"

तब कबीर ने कहा—"हम स्वतन्त्र हैं, दिल्ली की बादशाह के आधीन हैं। यदि उसका आज स्वतन्त्र है, तो उसकी दया के कारण ही। यह हमें नहीं भूलना चाहिए।"

"जो हमेशा काँटे की तरह चुभ रही हो, उस बात को कैसे भुलाया जाय! यह बदनामी जल्दी ही हटा लीजिए।" यह कहकर उस्मानखान ने कबीर को भेज दिया।

वह चिन्तित हो, अपने कमरे से अन्तःपुर की ओर चलने लगा। उसके विचार दौड़ रहे थे।

पठान और मुगलों की जो सन्धि हुई थी, वह मुगलों को ही ज्यादा फायदेमन्द रही। यदि कतलूखान अचानक न मर जाता, तो सन्धि ही न होती। तब युवराज पठानों के हाथ में था। एक युद्ध में मानसिंह की हार भी हो गई थी। नवाब

की मौत के कारण, जो अराजकता पैदा हो गई थी, उसके कारण पठानों को सन्धि करनी पड़ी थी। उनकी, सब कहा जाये, तो हार नहीं हुई थी।

"मानसिंह का स्वागत करने के लिए, उनके भोजन आदि की व्यवस्था करने के लिए, किसी बड़े कर्मचारी को नियुक्त करूँगा। पर उनको भेंट उपहार नहीं भेजूँगा।" सोचता, उस्मानखान आगे चला।

उसके विचार, अयाशा की ओर गये। जगतसिंह जब मिला था, उसको न पाकर, बड़ी गलती की। अयाशा उससे प्रेम करती थी। भले ही उसको अयाशा पर प्रेम न हो, पर जब तक वह जीवित है, अयाशा उसे प्रेम करना नहीं छोड़ेगी। जैसे भी हो, उसे मारना होगा।"

वह सोचता, जब वह जा रहा था, तो काश्मीर बेगम ने उस्मानखान को बुलाया। उसने, उसे बिठाकर यह बताया।

"दस साल पहिले अयाशा के चाचा, अपना सब कुछ उसे देकर, मुजर गये थे। उस मिल्कियत को अपने आधीन करने के लिए पंजाब के सूबेदार ने अपने नवाब के पास खबर भेजी। नवाब ने उस सम्पत्ति

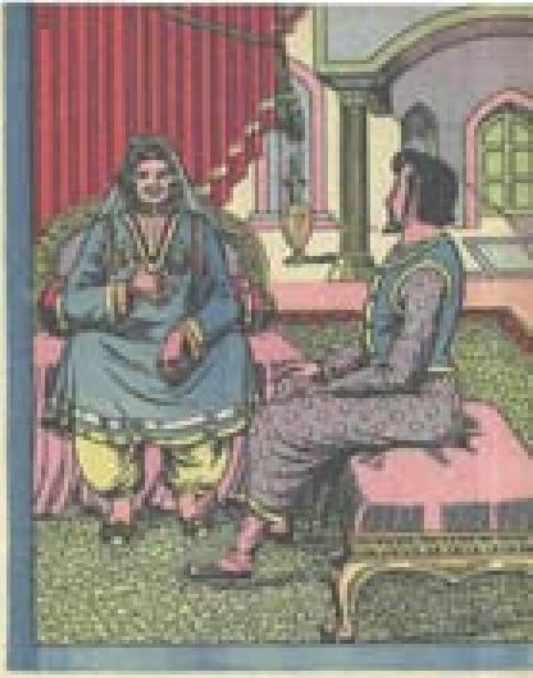

को सुरक्षित रखने को, कहने के लिए आदमी भेजे। वे आदमी अब आ गये हैं और कह रहे हैं, चूँकि अब अयाशा सयानी हो गई है, इसलिए वह स्वयं जाकर, उस सम्पत्ति को ले सकती है। क्या यह काम तुम कर दोगे?"

"वहाँ तुम्हारे भाई क्या काम करते हैं?"

"एक भाई पंजाब में सेनापति है। जिन्होंने यह सम्पत्ति अयाशा को दी है, वे जागीरदार थे। अयाशा की माँ सूबेदार की लड़की थी।"

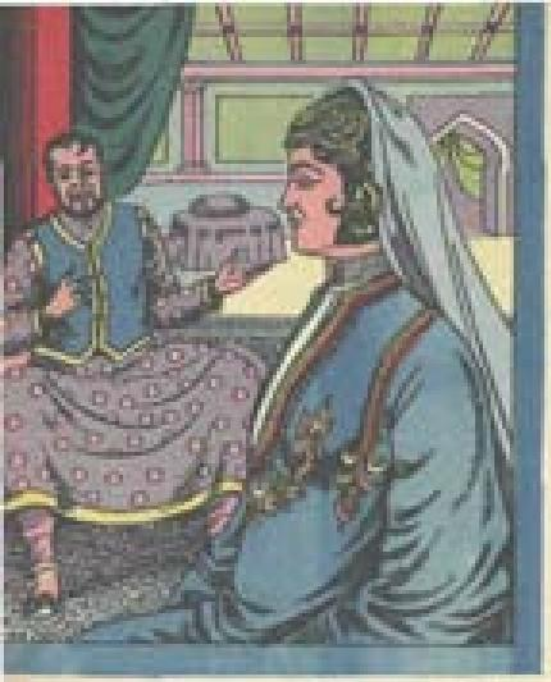

"वानि अयाशा की माँ मुगल है और पिता पठान। तो कनखलाम की गोरी की लड़की को मुगल सूबेदार की सम्पत्ति दी जाने में कोई रुकावट न होगी!"

"नहीं तो। अयाशा के पिता पर अकबर को बड़ा अभिमान था। अकबर का इस विषय में जाना एक फ़रमान भी है। अयाशा, अकबर बादशाह और उनके दरबार के लोगों को भी मालूम है।"

"आखिर, मुझे करना क्या है?"

"यह तुम ही सोच लो। अयाशा पंजाब जाना चाहती है। उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं है। स्थल-परिवर्तन से उसका स्वास्थ्य सुधर सकता है।"

"अयाशा की सम्पत्ति के बारे में कुछ न कुछ किया जा सकता है। पर अयाशा के चले जाने पर यहाँ अन्धकार हो जायेगा।" उस्मान ने कहा।

"हाँ, तुम अयाशा से प्रेम कर रहे हो। तुम दोनों का विवाह होगा, सोचा करते थे। आजकल तुम इस तरफ़ आते ही नहीं हो और उसकी हालत दूँ है।"

"माँ, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। अयाशा के लिए मैं प्राण तक न्योछावर करने को तैयार हूँ। अयाशा के मन को कोई चीज़ जला रही है, वह सुख तो जल ही रही है, वह हमें और आपको भी जला रही है। मैं उसे देखना चाहता हूँ।"

"दो घड़ी पहिले यहीं थी। शायद चमन में घूमने गई है। तो तुम पंजाब जाने के बारे में क्या कहोगे?"

"अयाशा का स्वास्थ्य जानकर, मैं अपना स्वास्थ्य आपको बताऊँगा। मुझे इजाज़त दीजिये।" यह कहकर, उस्मानखान, कश्मीर बेगम से विदा लेकर, चमन की ओर चला।

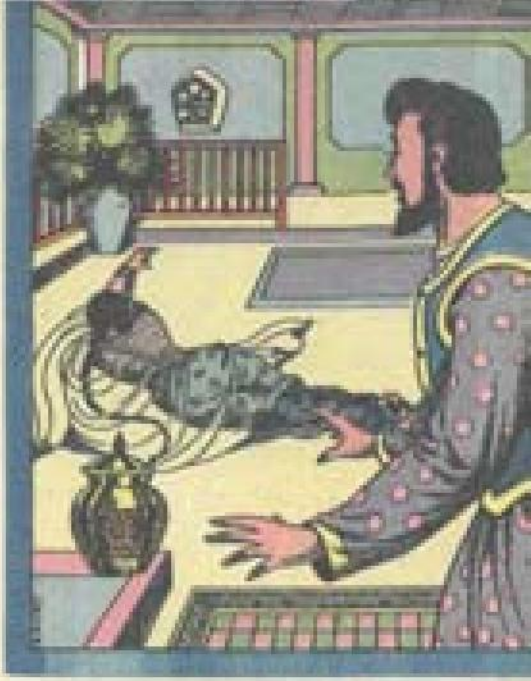

उसने अयाशा को क्रीड़ा सरोवर के आसपास ढूंढा। चम्पा के नीचे देखा, बेड़ों, झाड़ियों में उसे देखा। परन्तु अयाशा का कहीं पता न लगा। वह चमन के बीच बने मकान की ओर गया। एक दासी ने आकर बताया कि नवाबनन्दिनी उस मकान में थी।

उम्मान कदम रखता, धीमे-धीमे अन्दर गया। अयाशा को नीचे सोता देख, पीछे चला गया। पर उसे देखते ही कुछ सन्देह हुआ, कि कोई चीज उस पर रेंग रही है।

उसने दासी को बुलाकर, इशारे से कहा—"नवाबनन्दिनी सो रही है, मेरा अन्दर जाना अच्छा नहीं है। उसके शरीर पर कुछ रेंगता नजर आ रहा है। जरा देखकर तो आओ।"

दासी ने अन्दर जाकर, फिर घबराकर बाहर आकर कहा—"बड़ा साँप...."

"हिलो मत, न बोलो, न चिल्लाओ।" दासी से कहकर, उम्मान अन्दर गया। मखमल सांप अयाशा की पीठ पर सवार हो, उसके बांयी तरफ सिर रखकर सो रहा था। अयाशा जरा भी हिलती, तो वह डस सकता था। यह सोचते ही उम्मान काँप उठा। उसने बड़ी होशियारी से, साँप की पूँछ पकड़कर उसे खींचा। साँप ने भी चुस्ती से अपना फन उठाया, पीछे देखा, फिर डसने के लिए फुंकारने लगा। उसने अपने दायें हाथ से उसके सिर को दबा दिया।

उम्मान ने दासी से अपनी तलवार मंगाई। बायें हाथ से उसने दायें हाथ के नीचे दबे हुए साँप पर कई वार किये। फिर उसने उसे दूर फेंक दिया। जब वह हाथ पर लगे खून को धोने के

लिए झरने के पास गया, तो अवाशा की निद्रा भंग हो गई।

जब उसे दासी द्वारा यह मालूम हुआ कि उस्मान वहाँ आया था, तो उसने सोचा जो नींद में उसे ठंडा ठंडा लगा था, वह उसका हाथ ही होगा। उसे बड़ा गुस्सा आया। यह जानकर कि वह झरने के पास था, वह वहाँ गई। "तुमने क्यों वह गन्दा काम किया! तुम क्यों मेरे सोने की जगह आये!"

"अवाशा, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। वहाँ प्रेम है, तुम नहीं जानते कि वहाँ नीच ख्याल नहीं हो सकते! मेरी शादी की उम्र हो चुकी है, तब भी मैंने शादी नहीं की है। मैं नवाब हूँ। मैं चाहे, जिस स्त्री से विवाह कर सकता हूँ। चाहे, जितनी भी रखैलें रख सकता हूँ। मैं, तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता था इसलिए यह काम न किया। यदि तुम्हें छूना ही हो, तो क्या मुझे चोर की तरह, जब तुम सो रही हो, तभी आने की जरूरत है! यदि खुले आम, तुमको मैंने अपना बना लिया, तो कौन मुझे रोक सकता है! मैंने तुम पर कोई और जबर्दस्ती नहीं की है।" उस्मान ने कहा। उसने उसे साँप की बात भी बतायी।

अवाशा ने आँसू बहाते, उसके दोनों हाथ पकड़कर कहा—"उस्मान! तुम्हारा प्रेम बहुत पवित्र है। उसको क्यों तुम ऐसे अयोग्य को देते हो! मैं मर क्यों न गई थी! मेरी उम्र साँप से क्यों रक्षा की! उस्मान।" रोती रोती वह वहाँ से चली गई। उस्मान हताश हो गया।

[अभी है]

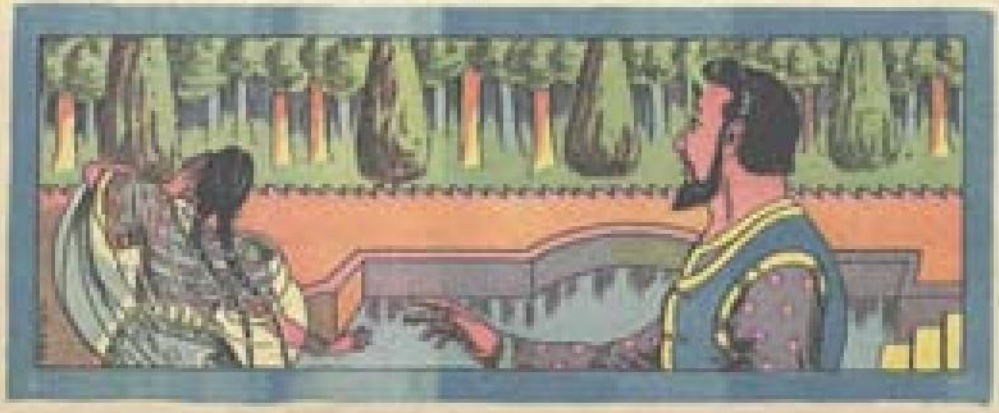

छोटे और बड़े

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा, वह फिर पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव उतार कर, कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित वेताल ने कहा—"राजा, तुम बड़ों में बड़े हो। बौनों ने जिस प्रकार पांचाल के राजा को सताया था, ऐसा लगता है, उसी प्रकार तुम्हें कुछ छोटे आदमी सता रहे हैं। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए उनकी कहानी सुनाता हूँ।" वह यूँ सुनाने लगा।

पांचाल के दक्षिण की सीमा पर एक पहाड़ की घाटी में बौनों का एक राज्य था। वे होने को मनुष्य थे, पर थे मनुष्य की छोटी अंगुली के समान थे। परन्तु बौनों का राजा कोई छोटा आदमी न था। उसके भी बहुत से सामन्त, मन्त्री, सेना, राज-कवि, भाट आदि थे।

वेताल कथाएँ

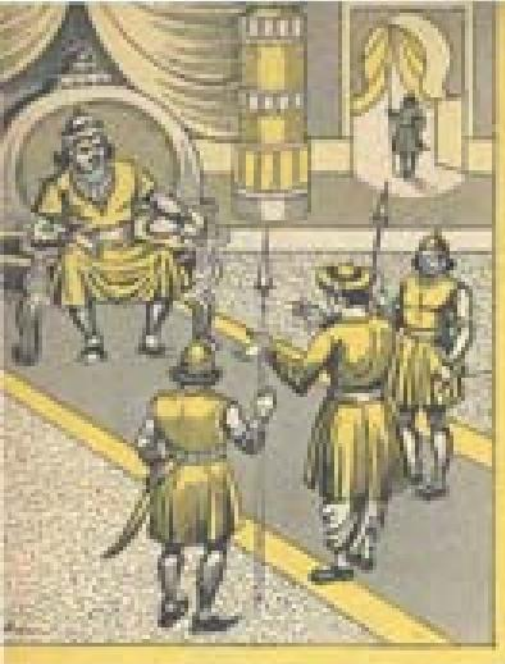

एक मौके पर बौनों के राजा ने एक बड़ी दावत दी और उसने अपने आधीन सब लोगों को उसमें निमन्त्रित किया। भाटों ने स्तोत्र गाये। गायकों ने गाया। इतना सारा वैभव देख, बौनों का राजा बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उसने खड़े होकर कहा—"यहां जितने लोग हैं, क्या उनमें से किसी ने मुझ से बड़ा राजा देखा है?"

"नहीं, नहीं...." बौने ने एक स्वर में कहा।

परन्तु उसने तुरन्त किसी का खिल-खिलाकर हँसना सुना। जो हँसनेवाला उसका अपना राज-कवि ही था। बौने राजा ने हँसने का कारण पूछा।

"हँसू नहीं तो क्या करूँ! हमारे यहाँ से करीब करीब एक योजन दूर एक जाति के मनुष्य हैं। उस जाति के मनुष्य ने अगर एक बार कदम ज़ोर से पटका, तो हम सब कुर्सियों पर से नीचे जा गिरेंगे और डर के मारे प्राण छोड़ देंगे।" कवि ने कहा।

"इस द्रोही को पकड़कर, तुरन्त काल कोठरी में डाल दो।" राजा ने कहा।

"महाराज! जल्दबाज़ी न दिखाइये। यदि आपने मुझे एक महीने की मोहलत दी, तो जो कुछ मैंने कहा है, उसमें कुछ न कुछ सचाई ज़रूरत साबित कर दूँगा।"

"अच्छा, तो मोहलत देता हूँ। पर यदि इस बीच, तुमने अपनी बात साबित न की, तो तुम काल कोठरी में डाल दिये जाओगे!" बौनों के राजा ने कहा।

बौना राजकवि घर गया। यात्रा की तैयारियाँ करके, तुरन्त पाँचाल राजधानी की ओर निकल पड़ा। वह वहाँ न रुका। सप्ताह भर चलने के बाद, वह राजधानी

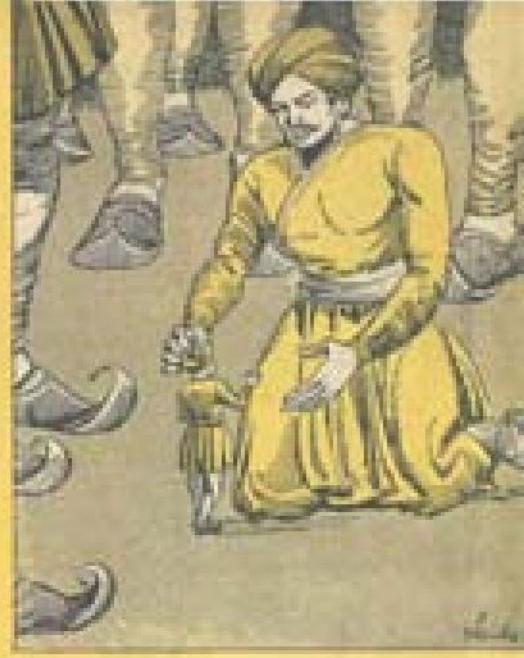

आया। द्वारपालक के पैरों के पास खड़े होकर, वह ज़ोर से चिल्लाया। द्वारपालक ने नीचे झुककर देखा। अपने सामने बित्ता ऊँचा आदमी देखकर उसने यह बात राजा से कही। घबराकर राजा ने यह सुनकर कि कोई बौना आया था, पूछा—"क्या वह बौना, हमारे कुबड़े जितना है!"

"नहीं महाराज, वह बौना हमारे कुबड़े की हथेली पर आसानी से खड़ा हो सकता है।" द्वारपालक ने कहा।

यह सुन दरबार में सब लोग हँसे। उसने छोटे आदमी को, अपनी आँखों देखने के लिए दरबार के लोग ड्योढ़ी के पास भागे भागे गये और बौने राजकवि को घेरकर खड़े हो गये।

"राक्षस बाबूजी! कुछ दूरी पर रहो, मैं तुम्हारी साँसों के सामने खड़ा नहीं हो पा रहा हूँ। मैं आपके राजा को देखने आया हूँ। क्या यह छोटा राक्षस मुझे राजा के पास ले जायेगा!" बौने कवि ने कुबड़े को देखकर कहा।

कुबड़ा पास आया। बौने कवि को होशियारी से मुट्ठी पर से उठाकर, अपनी हथेली पर रख, राजा के पास ले गया। बौने राज-कवि को देख राजा बड़ा खुश हुआ। बौने कवि ने राजा को अपनी बौनों की दुनियाँ के बारे में बहुत-सी अचरज भरी बातें बताकर, अपनी कविता शक्ति भी दिखाई। राजसभा में सबने उसकी कविता शक्ति को सराहा भी।

"बौने राजकवि, तुम तीन दिन तक हमारे अतिथि बनकर रहो, फिर जाना।" राजा ने कहा।

"महाराज! यदि आपने अपने कुबड़े को हमारे राज्य में भेजा, तो मैं आपका अतिथि होकर रहने के लिए तैय्यार हूँ।"

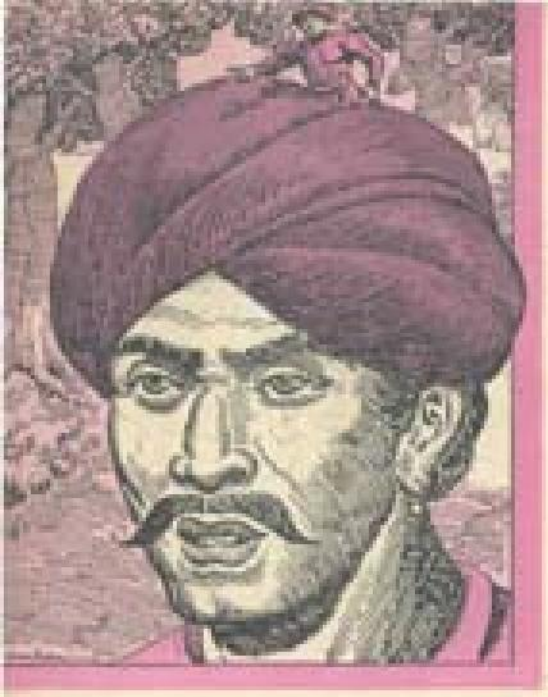

बौने राजकवि ने कहा। राजा इसके लिए मान गया। बौना राजकवि वहाँ रहने को, तीन दिन रहा तो पर उसे कोई आराम न मिला। पांचाल देश के लोग, उसे देखने के लिए आते रहे। तीन दिन तीन युगों की तरह बिताकर, बौना राजकवि कुबड़े को साथ लेकर, अपने देश के लिए लौटा। इस बार राजकवि के लिए रास्ता आराम से और जल्दी तय हो गया—क्योंकि वह कुबड़े की पकड़ी में बैठकर, रास्ता दिखाता आया था। थोड़ी देर में, वे बौनों की दुनियाँ में जा पहुँचे।

कुबड़े को थोड़ी दूरी पर देखकर, "अरे राक्षस" कहते, बौने डर के मारे हो हल्ला करने लगे। बौने राजा के पास खबर पहुँची कि बौना राजकवि, किसी राक्षस को साथ लेकर चला आ रहा था। राजा ने बौने कवि को बुलाकर पूछा—"कहाँ से आ रहे हो! सुनता हूँ हमें मरवाने के लिए किसी राक्षस को साथ लाये हो! क्यों?"

"वह भला राक्षस क्यों है! वह तो कुबड़ा है, उससे चौगुने बड़े आदमी हैं।" बौने राजकवि ने कहा।

बौना राजा कुबड़े की मुटाई और ऊँचाई देखकर अचरज में पड़ गया। उसे विश्वास न हुआ कि इससे भी बड़े आदमी होते होंगे। राजकवि ने कहा—"यदि आप मनुष्यों को देखना चाहते हैं, तो आप इस कुबड़े के देश में जाइये।"

कुछ दिनों बाद, बौना राजा किसी से कुछ कहे बगैर, मनुष्यों को देखने के लिए घोड़े पर सवार होकर, पांचाल राजधानी की ओर निकल पड़ा। जब वह राजमहल में पहुँचा, तो अन्धेरा हो गया था। सब सो रहे थे और बौना राजा, भूख के कारण

मरा जा रहा था। वह दरवाजे के नीचे से रसोईघर में पहुँच गया। भोजन ढूँढ़ता ढूँढ़ता पाकशाला में जा पहुँचा। वहाँ के छोटे छोटे बर्तन भी उसे बड़े बड़े पात्र लगे। वहाँ रखे एक छोटे पात्र के सिरे पर चढ़ने पर वहाँ अच्छे सुगन्ध आई। उस पात्र के तले में कुछ खीर थी। उसे खाने के लिए बौना राजा उसमें कूदा, खीर में कन्धे तक जा फँसा और वह ऊपर न चढ़ सका।

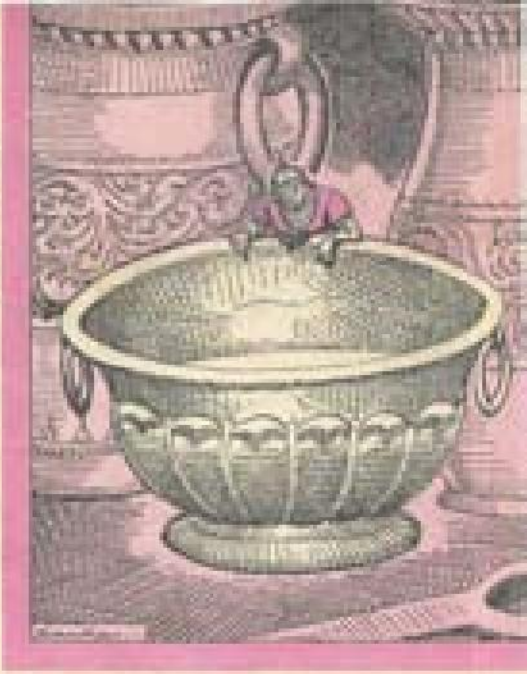

अगले दिन पाकशाला की स्त्रियों ने जब उसको खीर के बर्तन में देखा, तो वह सोचा कि उससे पहिले वहाँ चोर हुआ, वह बौना राजकवि ही था। वे उसे राजा के पास ले गये।

बौना राजा, जो कुत्ते को देखकर ही डर गया था, असली मनुष्यों को देखकर इतना डरा कि उसके प्राण जाते जाते बचे। वह पंचाल राजा को देखते ही चिल्लाया—"मुझे छोड़ दीजिये। मैं बौना राजा हूँ। हमारे देश में मुझे लोग कितने ही आदर से देखते हैं।"

पंचाल राजा ने हँसकर कहा—"यह तुम्हारा देश नहीं है। तुम हमारे पास गौरव के साथ नहीं आये हो। तुम्हें हमारे दासियों ने छोटे बर्तन में से निकाला है। मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा।"

सचमुच बौना राजा कुछ न कर पाया। बौनों को यह जानने के लिए बहुत दिन लगे कि उनका राजा पंचाल राजा का कैदी हो गया था। बौने राजकवि ने अपने राजा को वापिस जाने देने के लिए अनुनय विनय की।

"अगर न जाने दिया, तो तुम्हारे बौने क्या करेंगे!" पंचाल राजा ने कहा।

"अगर हमने जिद पकड़ ली, तो हम कुछ भी कर सकते हैं। हमारे पास मंत्रों

बल है। बाद में, शायद आपको पछतावा हो।" दोनों राजर्षि ने कहा।

"देखें, तुम्हारी ताकत भी कितनी है। हम तुम्हारे राजा को वापिस नहीं देंगे।" राजा ने कहा।

उस साल पांचाल देश में जहां जहां किसानों ने खेत बोये, वहां वहां खेत नष्ट हो गये। उस साल देश में मुट्ठी-भर धान न पैदा हुआ। लोगों को खाने के लाले पड़ गये। भयंकर अकाल पड़ा।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। कौन छोटा है, कौन बड़ा! अंगुली बराबर बौनों की शक्ति अधिक है या मामूली मनुष्यों की शक्ति! यदि तुमने जानबूझकर, इस सन्देहों का निवारण न किया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"शायद किसी एक बात को लेकर, हम किसी को छोटा बताते हैं और किसी को बड़ा। पर इस सृष्टि में सब तरह से छोटा और सब तरह से बड़ा कोई भी नहीं है। वह राक्षस जिसने पर्वत पर पग रखे थे और जो देवताओं द्वारा भी नहीं हराया जा सका था, बन्दरों द्वारा नष्ट कर दिया गया! जो बड़ा, अपने बड़प्पन का गर्व करता है, वह उस गर्व के कारण ही छोटा हो जाता है और वह छोटा भी अपमानित होकर या अन्याय का शिकार होकर, अपार शक्तिशाली हो जाता है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

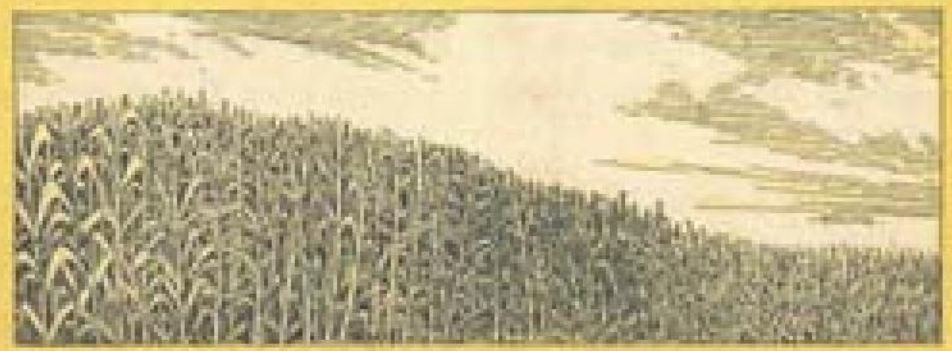

मन्त्री का लड़का

तुर्की देश के सुल्तान की कई पत्नियाँ थीं। उनके चालीस बच्चे थे। उन सब में से छोटे की उम्र विवाह के योग्य होते ही, सुल्तान ने अपने चालीसों लड़कों को बुलाकर कहा—"अब तुम सब शादी कर लो।"

सुल्तान के सब बच्चे इस कदर मिल जुलकर रहा करते थे, जैसे एक ही माँ के बच्चे हों। इसलिए उन्होंने आपस में पूछ-ताछ कर अपने पिता से कहा—"यदि कहीं, चालीस बहिनें हों, तो हम उनसे विवाह कर लेंगे।"

"क्या एक ही परिवार में चालीस बहिनें हो सकती हैं!" सुल्तान ने पूछा।

"यदि नहीं हो सकतीं, तो हम विवाह ही न करेंगे!" सुल्तान के लड़कों ने कहा।

उनकी जिद देखकर सुल्तान ने सारे देश में इस बारे में ऐलान करवाया। अपने सैनिकों को भाजन करने के लिए भेजा कि कहीं चालीस बहिनें हैं कि नहीं। एक परिवार तो ऐसा अवश्य दिखाई दिया, जिसमें उनतालीस बहिनें थीं, पर चालीस बहिनोंवाला परिवार कहीं न दिखाई दिया।

"क्या संसार बाँझ हो गया है! भूमि पर और भी कई देश हैं। सब देश छान डालो। जहाँ चालीस बहिनें होंगी, वहाँ हम शादी करेंगे।" सुल्तान के लड़कों ने कहा।

सुल्तान और कर भी क्या सकता था, वह इसके लिए मान गया। जब उसके बच्चे देश-विदेश में घूमने जा रहे थे तो सुल्तान ने अपने बड़े बजीर के लड़के को

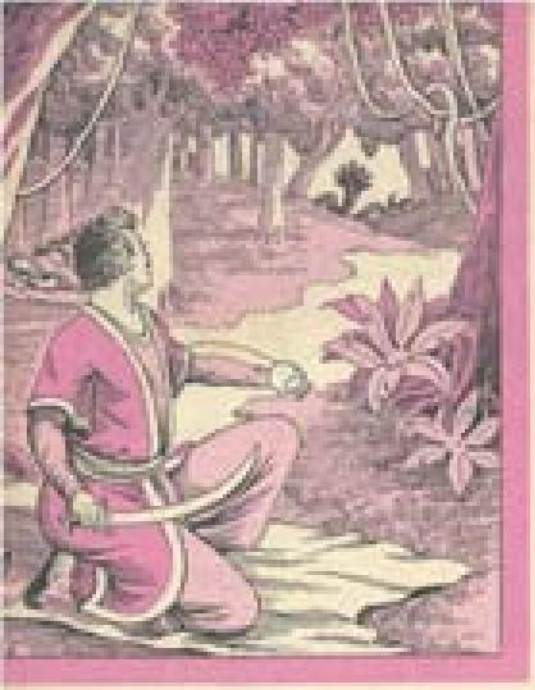

भी उनके साथ भेजते हुए कहा—"हमारे देश की सीमाएँ पार करने के बाद एक कुँआ आता है। वहाँ तुम मत सोओ। और कुछ दूर जाने के बाद एक पड़ाव आता है, वहाँ भी मत सोना। फिर एक रेगिस्तान आयेगा, रेगिस्तान पार करने तक कहीं न सोना। ये बातें बिल्कुल न भूलना। जाओ, आराम से काम पूरा करके आओ।"

सुल्तान का आशीर्वाद प्राप्त करके, सुल्तान के लड़के और वज़ीर का लड़का घोड़ों पर सवार होकर निकल पड़े। सीमा पार करके जब वे कुँए के पास पहुँचे, तो शाम हो गई। वहाँ उन्होंने भोजन किया। कुछ देर आराम करने के बाद सुल्तान के बड़े लड़के ने कहा—"मैं बहुत थक गया हूँ। मैं अब आगे नहीं जा सकता। यहीं रुकें, अन्धेरा भी हो रहा है। आज रात को यहीं सो जायेंगे।"

"सुल्तान ने बार बार कहा था कि यहाँ मत सोना।" वज़ीर के लड़के ने कहा।

"अरे, हम इक्कतालीस लोग हैं, हम पर क्या आफ़त आयेगी!" सुल्तान के लड़कों ने कहा। वे उस दिन रात को वहीं आराम से सो गये। परन्तु मन्त्री का लड़का जागा रहा।

आधी रात के समय कहीं उसको कोई आहट सुनाई दी। वह तलवार लेकर खड़ा हो गया। कुछ दूरी पर उसने सात फनवाले एक साँप को देखा। वह तलवार घुमाता उसकी ओर लपका। दोनों में कुछ देर लड़ाई हुई। वज़ीर का लड़का, साँप का एक एक फन काटने लगा। उसके छः फन तो एक ही जगह गिरे, पर सातवाँ फन लुढ़कता लुढ़कता पास के एक कुँए में जा गिरा।

ऐसा क्यों हुआ था, यह जानने के लिए वह एक बड़ा रस्सा लाया। उसके एक सिरे को कुँए के एक पत्थर से मजबूती से बाँध दिया और दूसरा सिरा अपनी कमर में कस लिया। और उसकी मदद से वह नीचे उतर पड़ा। जब वह तह में पहुँचा तो उसको एक दरवाज़ा दिखाई दिया। जब वह दरवाज़ा खुला तो कुछ दूरी पर उसको एक बड़ा सुन्दर भवन दिखाई दिया।

बशीर का लड़का उस भवन में चलने लगा। उसके दोनों ओर कमरे थे। एक एक कमरे में एक एक सुन्दर स्त्री थी। कुल मिलाकर चालीस कमरों में चालीस स्त्रियाँ थीं। वे एक नये आदमी को देखकर डरीं।

तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने अभी अभी सात फनवाले नागेन्द्र को मारा है। जब एक फन कुँए में गिरा, तो मैं भी यहाँ नीचे उतर आया।

यह सुनते ही उन्होंने कहा—"हमारी कैद खत्म हो गई है। अब हम यहाँ नहीं रहेंगे। हम चालीस बहिनें हैं। इसलिए हम सब को तुम अपने साथ ले जाओ।"

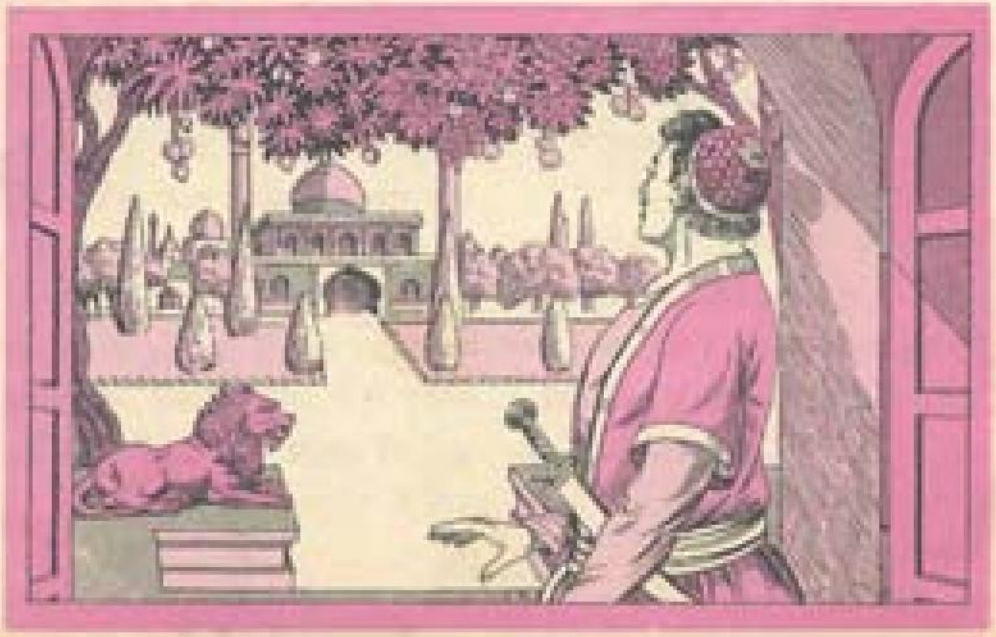

"ज़रा सब्र करो। मैं फिर जल्दी आकर, तुम्हारे बारे में सोचूँगा।" यह कहकर मन्त्री का लड़का वहाँ से, उस रस्सी के सहारे ऊपर भूमि पर गया। सुलतान के सब लड़के गहरी नींद में थे। वह भी अपनी जगह लेटकर सो गया।

सुलतान के लड़कों ने सवेरे उठकर कहा—"खूब नींद आयी। पिताजी ने चिड़ुक हमें डराया था। चलो, अब चलें।" मन्त्री के लड़के ने उनसे साँप के बारे में नहीं कहा। वे सारे दिन सफर करके शाम को पड़ाव पर पहुँचे।

"यह जगह रात बिताने के लिए बहुत बढ़िया है।" सुलतान के बड़े लड़के ने कहा।

"तुम फिर सुलतान की सलाह के खिलाफ़ यह कर रहे हो।" मन्त्री के लड़के ने उनको याद दिलाया।

"हाँ, उनकी सलाह की बात छोड़ो। उन्होंने कहा था कि उस कुँए के पास मत सोना, हम सोये, क्या हुआ!" सुलतान के लड़कों ने कहा।

उस दिन रात को वे वहीं पड़ाव पर सो रहे। परन्तु मन्त्री के लड़के ने आँखें न मूँदीं। फिर आधी रात के समय एक और सात फनोंवाला साँप आया, जो पिछली रात के साँप से अधिक भयंकर और बड़ा था। मन्त्री का लड़का उससे भी भिड़ पड़ा। उससे काफ़ी देर तक लड़ता रहा। जैसे भी हो, उसने उसके सातों फन, एक एक करके काट दिये। इस बार भी उसका सातवाँ सिर लुढ़कता लुढ़कता एक कुँए में जा गिरा। मन्त्री का लड़का उस कुँए में उतरा। वहाँ के एक दरवाज़े में से उसने एक और भवन देखा। उसमें भी चालीस कमरे थे और एक एक कमरे में जवाहरात भरे थे।

मन्त्री का लड़का फिर ऊपर आया। और अपनी जगह सवेरे तक आराम से सोता रहा। सवेरे वे उठे फिर निकल पड़े। पहाड़ और घाटियाँ पार करके, शाम वे एक रेगिस्तान में पहुँचे। वहाँ उन्होंने पेट भरकर खाना खाया। रात वहाँ आराम करने की सोची। इस बार भी मन्त्री के लड़के ने उनको आगाह किया। उन्होंने उसकी बात न सुनी और वे वहीं सो रहे।

वे अभी न सोचे थे कि ऐसा लगा कि कोई भूचाल आ गया हो और पर्वत भी हिल गये हों। एक बहुत बड़ा, सात फनोंवाला साँप उनको कुछ दूरी पर दिखाई दिया। उसके मुख से लपटें निकल रही थीं। "तुम उसको भेजो, जिसने मेरे भाइयों को मारा है—मैं उसका खून तमाम अभी अभी कर दूँगा।" वह ज़ोर से गरज रहा था।

सुल्तान के लड़के उस साँप को देखकर और उसकी बातें सुनकर थर थर काँपने लगे। वह देख कि वे उस साँप का मुकाबला करने में उसकी मदद नहीं कर सकते थे, "तुम जिस रास्ते आये थे, उस

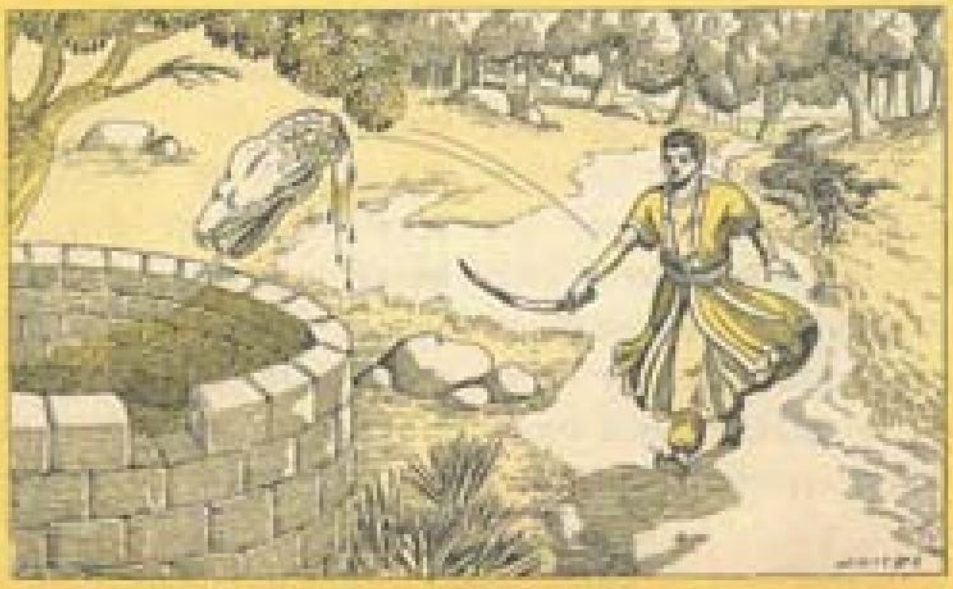

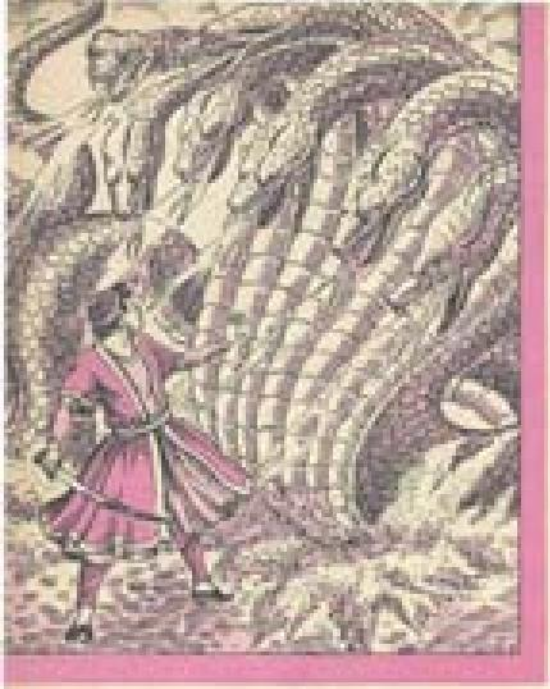

रास्ते चले जाओ। पड़ाव में एक जगह एक कुँआ है। उसमें उतरने से एक दरवाजा और दरवाजे में से एक महल दिखाई देगा। उस महल में चालीस कमरे हैं। एक एक कमरे में बड़े बड़े रत्न भरे पड़े हैं। वहाँ हम पहिले दिन सोये थे, वहाँ भी एक कुँआ है। उस कुँए में उतरने से भी एक महल दिखाई देगा। उसमें भी चालीस बहिनें हैं। उनको साथ ले जाकर उनसे विवाह कर लेना। यदि मैंने इस साँप को पछाड़ दिया, तुम्हारे पास आ जाऊँगा। नहीं तो मेरी आस छोड़ देना।"

मन्त्री के लड़के का यह कहना था कि सुल्तान के लड़के उस रास्ते दौड़ पड़े। मन्त्री का लड़का तलवार लेकर साँप से लड़ने लगा। दोनों में कई घंटे बराबर युद्ध होता रहा। दोनों ढीले पड़ते गये, पर कोई दूसरे को न जीत सका।

यह जानकर कि वह उस लड़के को नहीं मार सकता था, उस महामन्त्री ने एक और उपाय सोचा—"ठहरो, भाभी, हम युद्ध बन्द करें।"

"किस तरह?" मन्त्री के लड़के ने पूछा।

"यदि तुमने ईरान के बादशाह की लड़की लाकर दी, तो मेरा तुम्हारे साथ कोई झगड़ा न रहेगा।" सर्प ने कहा।

"पर वहाँ जाया कैसे जाये?" मन्त्री के लड़के ने पूछा।

"इस लगाम को लो, थोड़ी देर में, एक सफेद घोड़ा यहाँ आयेगा। वह रोज यहाँ चरता रहता है। तुम इस लगाम को उसे लगा देना और कहना कि यहाँ जाना पड़ते ही, वह तुम्हें वहाँ शीघ्र में पहुँचा देगा। जब तक तुम्हारा काम न हो जाये, तुम उस घोड़े को अपने साथ

रत्नमा और राजकुमारी के साथ लौटना।" यह कहकर सर्प अदृश्य हो गया।

सवेरा होते होते एक बड़ा घोड़ा आकाश में मँडराता मँडराता उस बाग में आया। मन्त्री के लड़के ने अपने हाथ की लगाम उसे लगा दी।

"मुझे ईरान देश के बादशाह के महल के पास ले जाओ।" वह उस घोड़े पर सवार हो गया।

उसका आँखें बन्द कर खोलना था कि उसने उसको बादशाह के महल के बाहर उतार दिया।

"जब मैं तुम्हारे बारे में सोचूँ, तब फिर आना।" घोड़े से यह कहकर, वह उस पर से उतर गया। तुरत घोड़ा अदृश्य हो गया।

मन्त्री का लड़का एक बुढ़िया के ढाबे में गया। वहाँ उसने वहाँ की खबरें जानी।

"सात समोवाले सागेन्द्र ने बादशाह की लड़की माँगी। जब बादशाह ने देने से इनकार कर दिया, तो सागेन्द्र ने उससे दुश्मनी ठान ली। यह दुश्मनी कैसे खतम होगी, कहा नहीं जा सकता। सागेन्द्र से डरकर बादशाह ने अपनी लड़की महल में

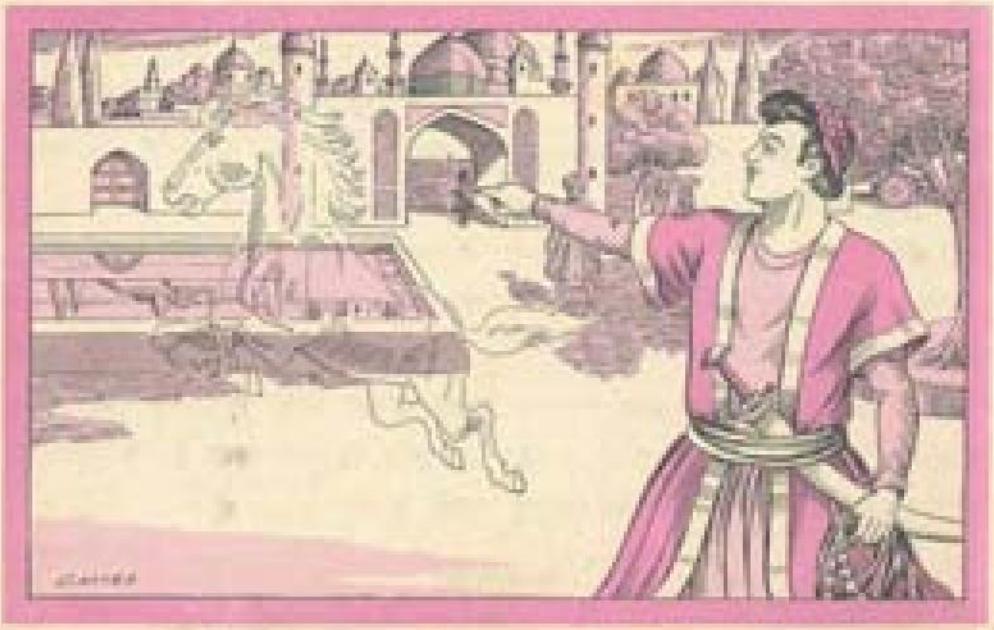

न रखकर एक और जगह रख रखी है।" उस बुढ़िया ने उसे बताया।

"क्या तुम जानती हो, उसे कहाँ रखा है?" मन्त्री के लड़के ने कहा।

"यह बहुत बड़ा भेद है। राजमहल के पास में एक छोटा-सा घर है। बादशाह की लड़की उसमें है। घर के आसपास जबर्दस्त पहरा है।" उस बुढ़िया ने बताया।

जिस लड़की पर इतना जबर्दस्त पहरा हो, उसे चोरी चोरी उड़ा ले जाना सम्भव न था। इसलिए मन्त्री का लड़का मामूली कपड़े पहिनकर बाग में गया। उसने पहरेदारों से कहा कि वह बाग का काम करने आया था। उन्होंने उसे बड़े माली के पास भेजा। लड़का खूबसूरत था और गलमन्द भी जान पड़ता था, इसलिए बड़े माली ने उसको पानी देनेवाले नौकरों पर निगरानी करने के लिए नियुक्त किया।

किसी नये नौजवान को इधर उधर घूमते देखकर, बादशाह की लड़की ने उसे खिड़की में से देखा और वह उससे प्रेम करने लगी। जब वह एक समय खिड़की के पास था, तो उसने साहसपूर्वक से पूछा—"तुम कौन हो? और यहाँ क्यों आये हो?"

"मैं तुर्की देश के वजीर का लड़का हूँ। मैंने दो सात फनवाले साँपों को मारा है और तीसरे सात फनोंवाले साँप के कहने पर मैं यहाँ आया हूँ।" मन्त्री के लड़के ने कहा।

सात फनवाले साँप का नाम लेते ही राजकुमारी का मुँह फीका पड़ गया।

"डरो मत, यदि तुम मेरे साथ चली आई तो हम किसी न किसी तरीके से, उस साँप को मार सकते हैं।" मन्त्री के लड़के ने कहा।

उसे उस पर पूरा विश्वास हो गया। वह उस दिन रात को उसके साथ चल दी। दोनों बाग के खिड़की के दरवाजे से बाहर आये और पैदल रेगिस्तान तक आये।

रास्ते में वजीर के लड़के ने बादशाह की लड़की से कहा—"इस साँप के प्राण किसी गुप्त स्थल में हैं। नहीं तो मैं उसे आसानी से मार देता। क्या तुम उस गुप्त स्थल को जान सकोगी? एक उपाय करो। हमेशा रोती रहना। जब वह पूछे कि क्यों रो रही हो, तो कहना— "तेरे सब शत्रु हैं, न मालूम कब तुझे कोई मार दे। तब मेरी गति क्या होगी? फिर मुझे मेरा पिता वापिस नहीं आने देगा।" कहकर और जोर से रोना। तुम्हें दासत्व बँधाने के लिए साँप बतायेगा कि उसके प्राण कहाँ हैं। फिर वह तुम मुझे बता देना।

बादशाह की लड़की ने जैसा कि उसने कहा था, वैसे ही साँप के सामने ढोंग रचा। उसने मालूम कर लिया कि उस साँप के प्राण, समुद्र के पार एक किले में एक शेर के पेट में है।

यह बताते ही मन्त्री के लड़के ने अपने पास की कमान निकालकर, घोड़े के बारे में सोचा। तुरत वह आया। मन्त्री का लड़का उस पर सवार हो गया और चुटकी मारते ही, वह समुद्र के पार के एक किले में उतरा। उसके किले में उतरते ही एक शेर गरजता हुआ आया। मन्त्री का लड़का तो उससे मुकाबला करने के लिए तैयार था ही, उसने अपनी तलवार से उसका सिर काट दिया और पेट को फाड़ दिया। उसमें से एक कबूतर निकलकर उड़ा। सौभाग्य से मन्त्री के लड़के ने उसे पकड़ लिया।

वह फिर कबूतर को लेकर घोड़े पर सवार होकर, साँप के रहने की जगह आया। उसके हाथ में उस कबूतर को देखते ही वह साँप डर से काँपने लगा। "मेरे प्राण! उसे मेरे हाथ में एक बार दो, बड़ा सन्तुष्ट होऊँगा।" सर्प ने कहा।

मन्त्री का लड़का, उसका धोखा न ताड़ सका। उसने उस कबूतर को साँप को देना चाहा। बादशाह की लड़की ने उस कबूतर को मन्त्री के लड़के के हाथ से छीन लिया। उसका गला मरोड़कर, मारकर उसे दूर फेंक दिया।

तुरत सात फनोंवाला साँप मरकर नीचे गिर गया।

मन्त्री का लड़का बादशाह की लड़की को साथ लेकर घोड़े पर सवार होकर बादशाह के महल गया। वह यह सुनकर बड़ा खुश हुआ कि उसका परम शत्रु सहायक मार दिया गया था। उसने अपनी लड़की का जिसने उसे साँप के चुंगल से बचाया था उसके साथ विवाह कर दिया।

मूल और सूद

पद्मालाल के गाँव में पनसारी की दुकान खोलने के लिए पास के गाँव में रहनेवाले गोविन्द नाम के युवक ने कुछ रुपया जमा किया। परन्तु उसे अभी सौ रुपये की और दरकार थी। उसे अपने गाँव में उतना रुपया नहीं मिला। तब उसके एक मित्र ने कहा—"अरे, क्यों तकलीफ उठाते हो! जिस गाँव में तुम दुकान खोलना चाहते हो, उसी गाँव में परोपकारी पद्मालाल रहता है। उसके पास पैसा है। तभी तो उन्होंने हाल में किसी का सम्मान किया था। यदि उससे माँगोगे, तो वह न नहीं करेगा। यदि वापिस भी न दिया, तो वह पूरा माननेवाला आदमी नहीं है।"

गोविन्द को यह सलाह बड़ी अच्छी लगी। वह पद्मालाल के पास आया। उसने पैसे के बारे में अपनी तकलीफ उससे कही। उससे उसने सौ रुपये माँगे।

"दान चाहते हो, या उधार!" पद्मालाल ने पूछा। उसके ये पूछना देख, गोविन्द चकित रह गया। हुआ यह था कि कुछ दिन पहिले पद्मालाल अपने गुरु से मिला। तब गुरु ने पद्मालाल के कामों के बारे में जानकर कहा—"पद्मालाल, देखो, जब तुम दान दिया करो, तो यह देखा करो कि दान का वह पात्र है, या अपात्र। जरूरतमंदों को दान दिया जा सकता है। जो जरूरतमंद न हो उसको रुपया उधार देना भी उनकी सहायता करना है और इस तरह दिये गये उधार को न लेने से, पैसा न देनेवाले के पाप में, उधार देनेवाला भी हिस्सेदार होता है।"

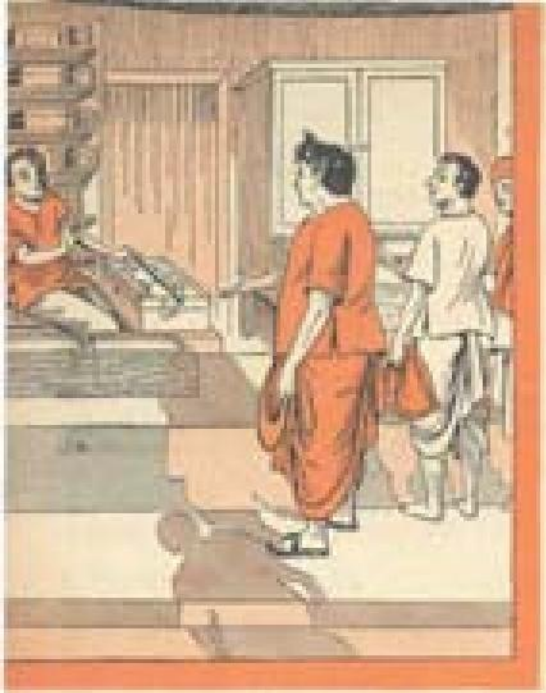

इस सलाह को ध्यान में रखकर ही पचालाल ने पूँजी पूछा था।

गोविन्द ने सगर्व कहा—"दान लेने की नौबत अभी नहीं आई है! उधार दीजिये। तीन महिनों में आपका उधार दे दूँगा। कहिये आप कितना सूद चाहेंगे?"

"अरे, तीन महिने में जब दे रहे हो, तो सूद वूद की क्या जरूरत है! यदि मूल दे दिया जाये, तो यही काफी है।" पचालाल ने कहा।

"क्या दस्तावेज लिखकर दूँ?" गोविन्द ने पूछा।

"यदि तुम्हें अपने ऊपर भरोसा न हो, तो लिखकर दे दो।" पचालाल ने कहा।

"आप ही देख लेंगे कि मुझे कितना भरोसा है।" यह कहकर, गोविन्द सौ रुपये लेकर चला गया। पचालाल ने भी एक जगह लिख लिया कि उसने गोविन्द को सौ रुपये दिये थे।

गोविन्द को दी हुई मिठाई खत्म हो गई। इस बीच उसने सुना कि पचालाल ने बहुत से दान धर्म किये थे। मुझ से तो इसने बड़े दुनियादार की तरह बात की थी, मगर अब यह आदमी उधार की बात नहीं उठायेगा।" उसने सोचा।

पचालाल ने एक साल तक देखा। फिर वह गोविन्द के पास गया। "भाई, तुमने एक साल पहिले मुझ से एक सौ रुपये उधार लिए थे। कहा था कि तीन महीने में चुका दोगे, पर अभी तक नहीं दिया। क्या तुम्हारा व्यापार ठीक तरह चल रहा है?"

"व्यापार तो ठीक चल रहा है, क्योंकि पैसा खर्च हो जाता है, इसलिए आपका पैसा न दे सका। जल्दी ही, मौका निकालकर आपके पैसे आपको भेज दूँगा।" गोविन्द ने कहा।

"नहीं दे सकते हो, तो कह दो, मैं सोच लूँगा कि दान कर दिया है।" पन्नालाल ने कहा।

पाँच दस आदमी दुकान में थे, गोविन्द यह बात बर्दाश्त न कर सका। "छी छी, दान किसलिए! उधार जब दिया है, तो उधार ही है। दे दूँगा।" कहकर वह पन्नालाल को एक तरफ ले गया और उसके कान में कहने लगा—सारी रकम एक ही बार दे देना अभी मेरे लिए कठिन है। दस रुपये महीने दे दूँगा। आपका क्या ख्याल है?"

पन्नालाल इसके लिए मान गया। गोविन्द ने पन्नालाल को दस रुपये देकर भेज दिया। उसके बाद वह हर महीने पन्नालाल को दस दस रुपये देता।

जब उसे वह उधार, जिसे वह वापिस न देना चाहता था, वापिस देना पड़ गया, तो गोविन्द पन्नालाल से नाखुश हो गया, वह पन्नालाल की बदनामी करने लगा। पन्नालाल जब जब दस रुपये लेने जाता, तब तब दुकान में कोई न कोई रहा करता। उनसे गोविन्द कहा करता—"इस बेचारे आदमी को देखिये। इनको

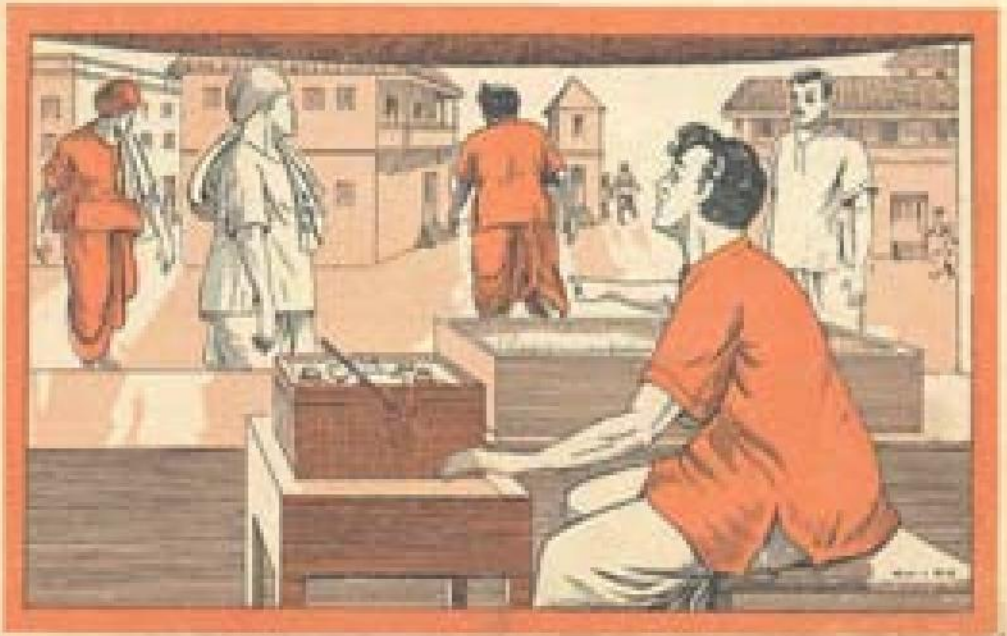

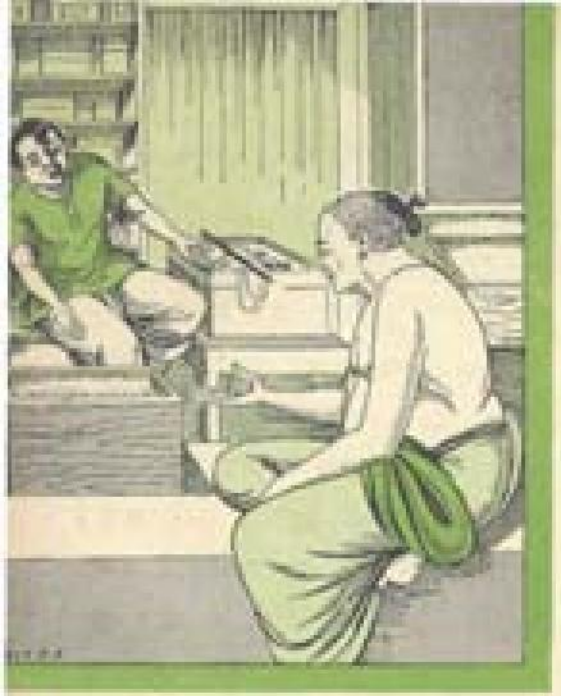

दानी कर्ण कहा जाता है। कभी मैंने इनसे सौ रुपये उधार लिये। उसके लिए महीने महीने दस रुपये का सूद वसूल रहा है। क्या किया जाय!"

यह बदनामी सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ और जो पन्नालाल को चाहते थे, उनको दुःख भी हुआ। इन चाहनेवालों में एक राघव सेठ भी था। उससे भी, गोविन्द ने वैसा ही कहा, जैसा कि औरों से कहता आया था। यह सुन राघव सेठ बौखलाया और उसने गोविन्द को बहुत बुरा भला कहा।

"पन्नालाल को सूद देते देते मुझ पर क्या गुजर रही है, आप नहीं जानते सेठ साहब। जब तक यह उधार है, न नींद है, न खाना पीना ही। मैं अपनी पत्नी के गहने बेचकर, उसका उधार चुका दूँगा। आप जरा उन्हें अच्छे दाम पर दिलवा दीजिये।" गोविन्द ने अपनी पत्नी के गहने लाकर, सेठ को दिये।

असली बात यह थी कि गोविन्द का व्यापार जोरों पर था। यदि पूँजी बढ़ा दी गई, तो साथ साथ के बढ़ने की भी गुंजाईश थी। इसलिए वह अपनी पत्नी के गहने, जैसे भी हो, बेच देना चाहता था। सेठ को देखकर, उसने यदि यह कहा कि वह उधार चुकाने के लिए उन्हें बेच रहा था, तो सेठ को उस पर और विश्वास हो जायेगा, यह सोचकर ही गोविन्द ने यह कदम किया था।

राघव सेठ को गोविन्द की बातों पर विश्वास भी हो गया। पर इतने भर से, पन्नालाल पर उसका विश्वास भी नहीं गया। पन्नालाल के पास जाकर उसने गोविन्द के उधार के बारे में पूछा।

"यह कहकर कि तीन महीने में चुका देगा, गोविन्द ने मुझ से सौ रुपये उधार

लिए। एक साल तक उसने एक रुपया भी न दिया। फिर जब मैंने जाकर पूछा, उधार दे दो, या मैं इसे दान समझ लूँ, तो उसने कहा कि महीने महीने दस रुपये देगा। नौ महीनों में नब्बे रुपये दे भी दिये। यदि दस रुपये उसने और दे दिये तो मेरा दिया हुआ सब मुझे मिल जावेगा। सूद की तो बात ही न थी।" पन्नालाल ने राघव सेठ से कहा।

राघव सेठ को बड़ा गुस्सा आया कि गोविन्द ने उसमें पूँजी झूठ बोला था। उसने पन्नालाल से कहा—"पन्नालाल जी, कल सवेरे दस बजते ही, आप गोविन्द की दुकान पर जाकर आना। वह आपका सारा उधार दे देगा।"

राघव सेठ ने यह क्यों कहा था, पन्नालाल न जान सका। पर चूँकि वह उसको आदर की दृष्टि से देखता था, इसलिए वह जाने के लिए मान गया।

अभी दस बजने में कुछ देरी थी कि राघव सेठ रुपयों की थैली लेकर, शहर के एक दो बड़े लोगों को साथ लेकर गोविन्द की दुकान के पास गया। उसने गोविन्द से कहा—"ये लो, गहनोंवाले रुपये।

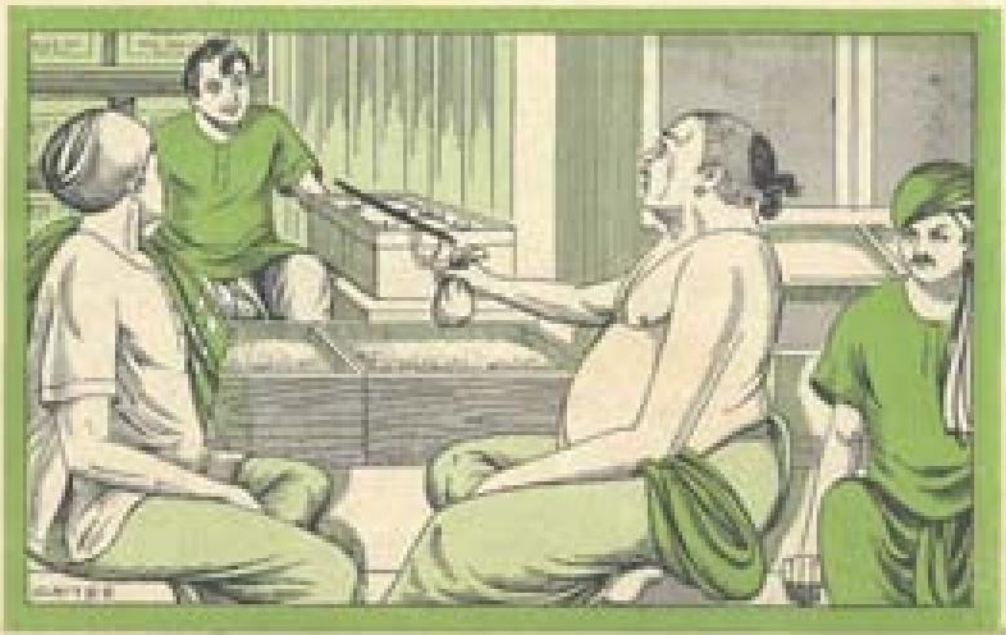

अच्छे दाम पर बेचे हैं। इससे पन्नालाल का उधार चुका दो और खुद विमुक्त होकर आराम से रहो।"

इतने में पन्नालाल वहाँ आ ही गया। राघव सेठ ने उससे कहा—"आइये पन्नालाल जी। हम आप ही के बारे में सोच रहे थे। बिचारे गोविन्द ने आपका पैसा चुका देने के लिए, अपनी पत्नी के गहने भी बेच दिये हैं। "वह ऋण विमुक्त होना चाहता है। छोटा मोटा व्यापारी है, इसलिए बड़ा सूद देते देते बुरी हालत हो गई। यह लीजिये इस महीने का सूद और मूल को मिलाकर ये रहे एक सौ दस रुपये।" उसने पन्नालाल को एक सौ दस रुपये देने चाहे।

पन्नालाल ने चकित होकर कहा—"यह क्या सेठ साहब! गोविन्द ने मुझ से लिये ही थे एक सौ रुपये। चूँकि वह एक साथ सब नहीं दे सका था इसलिए वह महीने में दस दस रुपये दे रहा था। मुझे दस रुपये ही मिलने हैं, ऊपर से ये सौ रुपये क्या है!"

यह बात सेठ तो जानते थे, पर उसके साथ जो आये थे, वे नहीं जानते थे। उनका भी यह ख्याल था कि पन्नालाल गोविन्द से सूद वसूल रहा था, तब वे जान सके कि कैसे गोविन्द, पन्नालाल को बदनाम कर रहा था। उन्होंने गोविन्द को बहुत डाँटा फटकारा।

और पन्नालाल उनका शोर जनसुना करके, अपने दस रुपये लेकर चला गया। सब गाँव में जान गये कि गोविन्द ने पूँजी बदनामी की थी। उस दिन से, उसका व्यापार भी मन्दा पड़ गया।

राजकुमारी हँसी

एक राजा के एक बड़ी खूबसूरत लड़की थी। उसके सौन्दर्य के बारे में बारह देशों में चर्चा थी। कई राजकुमार उससे विवाह करने के लिए आये। उसने उनमें से किसी एक को भी न देखा। असली बात यह थी कि इस खूबसूरत राजकुमारी को आदमियों से बड़ी नफरत थी। यही नहीं, वह कभी हँसती भी न थी कभी चेहरे पर मुस्कराहट भी न आती।

अपनी लड़की को बड़े बड़े राजकुमारों को दुकराता देख, राजा ने कहा, जो कोई उसकी लड़की को हँसायेगा उसके साथ अपनी लड़की की शादी ही न करेगा, बल्कि आधा राज्य भी दे देगा।

यह घोषणा सुनकर तरह तरह के हंसोड़, विदूषक और कई लोग चारों ओर से झुन्डों में आये। उन्होंने राजकुमारी को हँसाने की बड़ी कोशिश की। परन्तु वे अपनी कोशिश में कामयाब न हो सके। राजकुमारी हँसी ही नहीं।

राजा के महल के पास एक किसान रहा करता था। उसके तीन लड़के थे। उसने अपने बड़े लड़के को बुलाकर कहा—"अरे, तुम्हें देखकर सब बड़े हँसते हैं। राजकुमारी को अगर तुमे हँसा दिया, तो हमारे भाग्य खिल उठेंगे।"

किसान का लड़का राजा के पास गया, उसने कहा कि वह राजकुमारी को हँसायेगा। राजा को बिल्कुल विश्वास न हुआ। फिर भी उसने उसे कोशिश करने के लिए कहा। किसान का बड़ा लड़का राजकुमारी को न हँसा सका, दण्ड में उसने

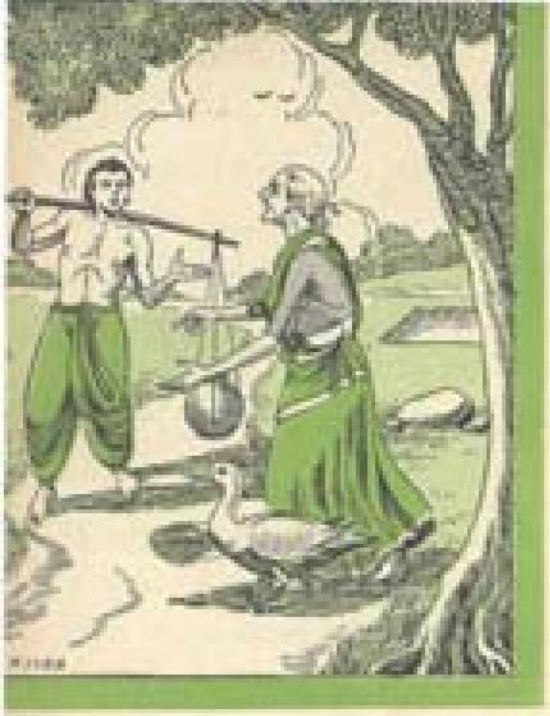

तीन घोड़े भी लाये। वह घर वापिस चला आया।

तुरत किसान के दूसरे लड़के ने कहा कि वह कोशिश करेगा। उसे देखते ही हँसी आती थी। उसका एक पैर छोटा और दूसरा बड़ा था। इसलिए जब एक पैर उठाकर दूसरा रखता, तो ऐसा लगता जैसे टीले से उतर रहा हो। वह बातूनी भी था। इसलिए पिता ने उसको भी राजा के पास भेजा। परन्तु राजकुमारी उसे देखकर भी न हँसी। उसे भी घोड़े मिले और वह भी घर वापिस चला आया।

इसके बाद किसान के तीसरे लड़के संग ने जाने की ठानी। उसमें बातूनी अक्ल भी न थी। उसे कोई काम काज भी न आता था। पहिले तो उसे भेजने के लिए पिता न माना। परन्तु संग हिठ पकड़कर राजा से मिलने गया।

उसने राजमहल में जाकर—"मैं, राजकुमारी को हँसाऊँगा।" औरों की तरह न कहकर, उसने कहा कि वह कोई काम चाहता था। उसे नदी से बेहंगी में पानी लाने का काम दिया गया।

एक बार जब उसने नदी में मटका डुबाया, तो उसमें एक बड़ी मछली आ गई। जब वह बेहंगी लेकर आ रहा था, तो उसको एक बुढ़िया एक बड़ी बक्कल लेकर आती दिखाई दी। वह बक्कल सुनहरे रंग की थी। देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती थी।

संग ने उससे कहा—"कितनी सुन्दर बक्कल है। क्यों नहीं, मुझे दे देती?"

बुढ़िया ने मटके में मछली देखकर कहा—"इस मछली को दे दो और बक्कल को ले लो।" संग इसके लिए खुशी खुशी मान गया। बुढ़िया ने मछली

लेकर बतख देते हुए कहा—"यह मामूली बतख नहीं है। इसे अगर कोई छुए तो कहना—"चिपक जाओ और साथ आओ।" कहते ही वह आदमी बतख से चिपक जायेगा और छूट नहीं सकेगा।"

"बहुत अच्छा, अगर ऐसी बतख है तो बहुत-सी मछलियाँ पकड़ी जा सकती हैं।" यह कहकर संग बतख को लेकर राजमहल की ओर निकला। रास्ते में उसे एक और बुढ़िया दिखाई दी। "कितनी सुन्दर बतख है, क्या इसे एक बार सहलाने दोगे?"

"सहला लो, पर पंख न खींचना।" संग ने कहा। बुढ़िया ने बतख पर हाथ रखा ही था कि उसने कहा—"चिपक जाओ और साथ आओ।" तुरंत बुढ़िया के हाथ बतख से चिपक गये। संग बतख के साथ आगे बढ़ा। बुढ़िया को भी साथ जाना पड़ा।

वे कुछ दूर गये थे कि एक आदमी ने जो बुढ़िया से ठगा गया था, गुस्से में एक लात उसे मारी तुरंत संग ने कहा—"चिपक जाओ और साथ आओ।" उस आदमी का पैर बुढ़िया से चिपक गया, इसलिए वह एक पैर पर लंगड़ाता आया।

वे वैसे ही राजमहल में पहुँचे। वहाँ एक कुहार ने यह दृश्य देखा, अंगड़ाते मनुष्य को पहिचान, उसकी मदद करने की सोची, उसे पीछे से खींचा, तुरत संग ने कहा—"चिपक जाओ और साथ जाओ।" कुहार भी उनमें शामिल हो गया।

इस तरह जब वे राजमहल के पिछवाड़े में गये, तो दोहता सुनकर राजा की पाकशाला में काम करनेवाली कर्मचियाँ हाथ में लिये बाहर आईं, संग के हाथ में बलम देखकर उन्होंने कहा—"कितनी सुन्दर कलम है, एक बार जरा छूने तो दो, संग।"

यह सुन बढ़ई ने कहा—"उसे क्या छूते हो, मुझे छूलो।"

"अरे, क्या कहा....कन्दर कहीं के।" कहती हुई उस स्त्री ने, उस पर एक करछी मारी।

"चिपक जाओ और साथ आओ।" संग ने कहा। रसोई करनेवाली भी अपनी करछी लिये लिये उनमें शामिल हो गई। इतने सारे लोगों को राजमहल के सामने ले आकर संग उनको मोटे में चलाने लगा। राजा के कुत्ते यह अद्भुत दृश्य देखकर भोंकने लगे। लोग जमा हो गये और शोर करने लगे। राजा और राजकुमारी और दासियाँ दुर्बीनों की खिड़की से बाहर देखने लगे। राजकुमारी नीचे का दृश्य देखकर यह कहा करके हँसने लगी। राजा को उसे पकड़ना पड़ा, नहीं तो वह हँसती हँसती इतनी लोट पोट हो गई थी कि वह नीचे गिर जाती। हजारों लोगों ने राजकुमारी को इस प्रकार हँसते हुए पहिली बार देखा, राजा ने उसका संग से विवाह कर दिया और उसको आधा राज्य भी दे दिया।

परम वीर

एक गाँव में एक मोची था। वह युवक था। समझदार और बहादुर भी था। चूँकि उसके बाप दादा, जूते बनाकर, ज़िन्दगी बसर करते आये थे, इसलिए उसको भी यह काम करना पड़ा। बकिलयाँ मारते एक झोंपड़े में अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ार देना, उसे बिल्कुल गँवारा न था। विशाल संसार है। कहीं भी भाग्य को आजमाया जा सकता है।

यह सोचकर मोची ने अपना नाम रणसिंह रखा। वीरोचित वस्त्र पहिने, एक तलवार लेकर वह अपना भाग्य खोजने निकला। जाते जाते वह राजधानी पहुँचा। रणसिंह सीधे राजमहल में गया। राजा के सामने जाकर उसने कहा—"महाराज, मेरा नाम रणसिंह है। मेरे शौर्य की कोई सीमा नहीं है। खुदरत से न मालूम मैंने कितनों के प्राण लिए हैं। मुझे आप अपनी नौकरी में रख लीजिये।"

राजा ने मोची को घूरते हुए कहा—"तुम देखने से तो कोई बड़े योद्धा नहीं मालूम होते हो। फिर भी तुमने अपना पराक्रम निरूपित किया तो, तुम्हें नौकरी में रख लेंगे। यहाँ पास के बंगल में एक नरभक्षक राक्षस रहता है। वह रोज एक दो को खा जाता है। उसने सब जगह बड़ा उत्पात मचा रखा है। क्या उसे मार सकोगे?"

"यह कौन-सा बड़ा काम है हुज़ूर! मैं इस तरह के साहसिक कार्य करने के लिए ही तो देश विदेश घूम रहा हूँ।" मोची ने कहा।

जगदीश

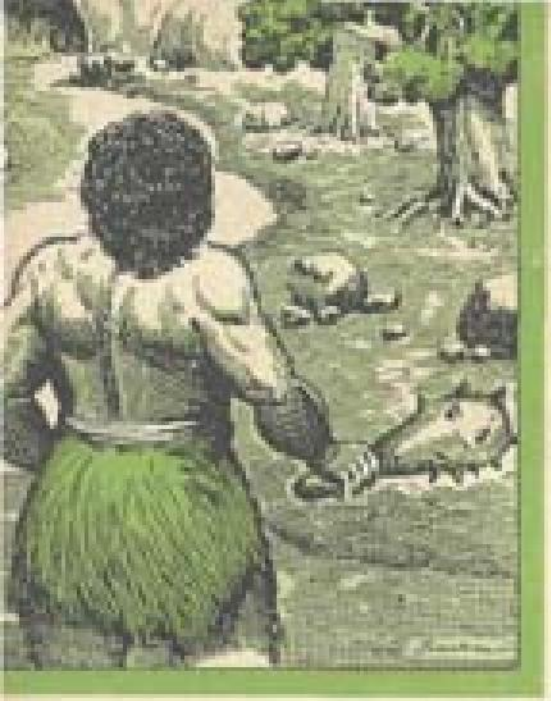

"उस राक्षस को मारने के लिए मैंने घोड़ा भेजे, पर काम न बना। उन्हें वह मारकर खा गया। इसलिए तुम जरा सोच समझ से काम लो।" राजा ने कहा।

"उसका सिर लाकर आपके सामने रखूँगा, ठीक है न!" मोची ने सीना तानकर कहा।

वह भले ही पराक्रमी और साहसी हो, पर राक्षस की बात सुनकर वह घबरा गया। पर उसे एक बड़ी होशियारी थी, कि राक्षसों में शारीरिक बल तो होता है, पर बुद्धि बल नहीं होता। उसमें साहस भी बल होता है। चाकू के फूरे में, रात मिलाकर, उसके पत्थर से बनाकर थैले में रखकर वह जंगल की ओर निकल गया। जाते जाते जंगल में, उसे राक्षस का घर दिखाई दिया। उसके पास वह एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया और राक्षस की इन्तजार करने लगा।

सूर्यास्त के समय राक्षस के आने की आहट सुनाई दी। भूमि काँप उठी, राक्षस जब टहनियाँ हटाता आया, तो वे टूट ही गईं। पेड़ों पर बैठे पक्षी चिल्लाते भाग गये। राक्षस जब उस पेड़ के पास आया, जिस पर मोची बैठा था, बोला "नर गन्ध" उसने जब ऊपर देखा, तो मोची को बैठा पाया।

"वहाँ हो! उतरो। नहीं तो पेड़ के साथ तुम्हें नीचे फेंक दूँगा।" राक्षस ने कहा।

"जरा ठहरो, मैं उतर रहा हूँ। तुम्हारी खबर लेता हूँ। संसार में मुझ से बढ़कर कोई बलवान नहीं है। मुझे तुमने समझ क्या रखा है! मैं रणवीर हूँ।" मोची ने कहा।

"मुझे विश्वास नहीं होता।" राक्षस ने कहा।

"नहीं विश्वास होता, तो आँखें खोलकर देखो। ये हैं पत्थर, देखो, मैं इनका क्या करता हूँ।" कहकर उसने अपने थैले में से पत्थर निकाले और उनके टुकड़े कर करके दूर झाड़ियों में फेंकने लगा।

राक्षस का सन्देह तो नहीं गया। परन्तु वह घबरा गया, पर उस छोटे आदमी के लिए, पत्थरों को चूरा चूरा कर देना असम्भव था, इसलिए रणसिंह के बारे में उसने सम्भलकर रहने का निश्चय किया।

राक्षस ने कहा—"यदि तुम इतने बलवान हो, तो आओ, हम दोनों दोस्ती कर लें। हमारे घर आओ। अच्छा खाना खिलाऊँगा।"

सीधी पेड़ पर से उतर आया। वह और राक्षस पैदल चलते राक्षस के घर आये।

"ईन्धन नहीं है। क्या जंगल जाकर, दो चार तने काट आओगे?" राक्षस ने पूछा।

"तना क्या! और तोड़कर लाने की क्या बात है! जो वे बड़े वृक्ष दिखाई देते

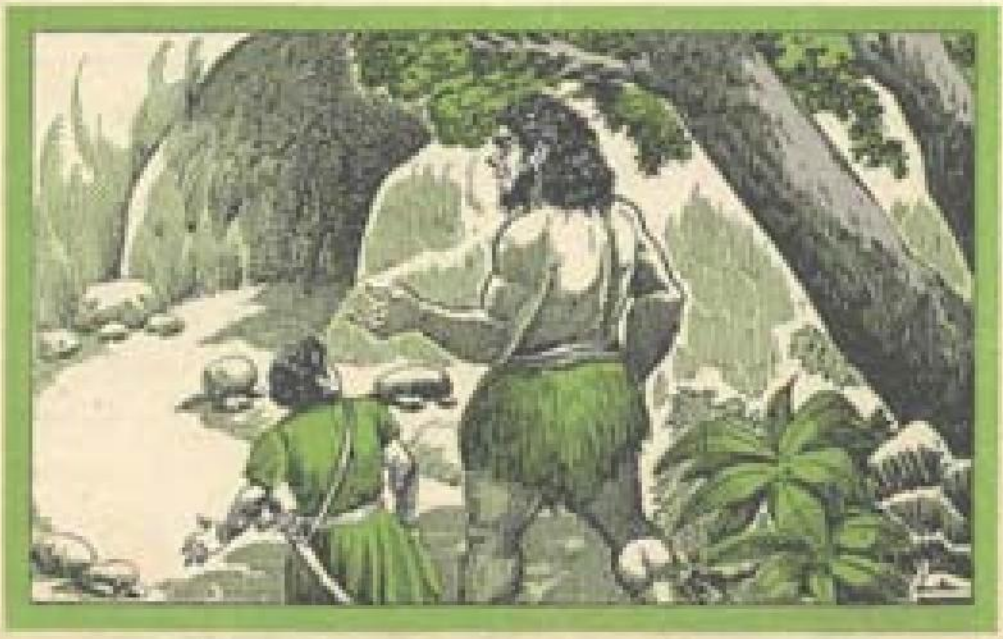

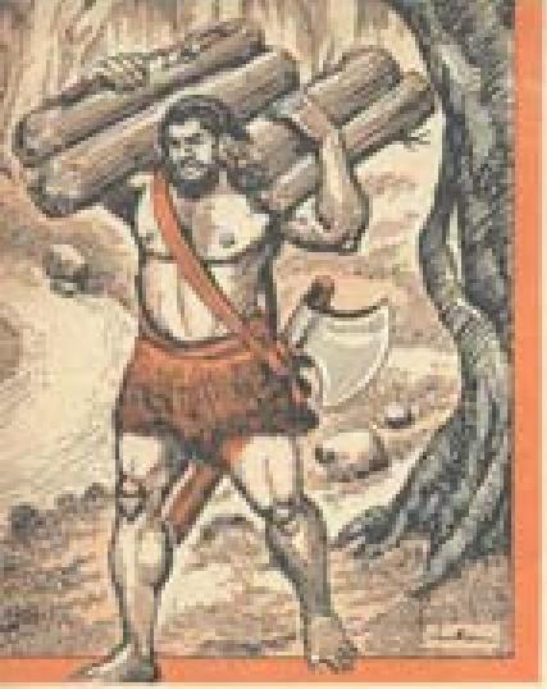

है उनमें से एक को उठाकर सींचकर, तुम्हारे आँगन में बो दूँगा।" मोची ने कहा।

राक्षस ने सोचा यदि उसने वैसा किया, तो शहद्दम शहद, मेरा घर आँगन साफ़ा-साफ़ कर देगा। उसने कहा—"जाने दो, हमें थोड़ा-सा ईन्धन चाहिए, मैं ही ले जाऊँगा।"

वह कुल्हाड़ी लेकर गया और दो चार लकड़ फाड़कर ले आया और उसको रसोई के एक कोने में फेंक दिया—"पकाने के लिए पानी नहीं है, कुँए से बाल्टी-भर पानी ले आओगे?" मोची से उसने कहा।

"बाल्टी भर पानी! अरे, कोई अच्छी रस्सी हो तो दो। कुँए को ही बाँधकर ले आऊँगा। उसे अपने ही आँगन में रख लेना।" मोची ने कहा।

उसे सन्देह तो था कि क्या सचमुच वह कुँए को रस्सी बाँधकर ले आयेगा, फिर भी डरकर कि कहीं वह वैसा न कर दे राक्षस ने कहा—"अच्छा जाओ, मैं ही थोड़ा पानी ले जाऊँगा।"

वह एक बड़ी बाल्टी ले गया और उसने पानी भर ले आया।

उस दिन रात को सोने के समय तक, मोची मौके व मौके शेखियाँ मारता रहा। उसकी बातें सुनकर राक्षस का डर भी बढ़ता गया।

उसने उस रात को जैसे भी हो, नरसिंह से भिड़ जुड़वाने की ठानी। इसलिए राक्षस ने उससे कहा—"मेरे घर में सोने के लिए एक ही पलंग है। उसी पर तुम भी एक तरफ़ सो लो।"

मोची इसके लिए मान गया। पर राक्षस का वह पलंग बहुत बड़ा था। अब

उसके एक तरफ राक्षस लेट गया, तो मोची ने भी पूँ दिखाया जैसे वह भी लेटकर सो गया हो, पर वह धीमे से नीचे उतर गया और अपने सिर की जगह एक बड़ा कद्दू रखकर, वह पलंग के नीचे खिसक गया।

थोड़ी देर बाद, राक्षस ने यह सोचकर कि उसका अतिथि गाढ़ी निद्रा में था अपनी चादर के नीचे से एक लोहे की छड़ी निकाली और कद्दू पर दस बार चोट की और सोचा कि उसमें सिर छूट गया था।

जब मोची ने राक्षस के छड़ी फेंक देने की ध्वनि सुनी, तो वह पलंग के नीचे से निकला और कद्दू के टुकड़े हटा कर, धीमे से अपनी जगह सो गया। अंगड़ाई लेते हुए उसने कहा—"ही, ही, इस पलंग में खटमल ही खटमल हैं। नींद हराम कर रखी है।"

राक्षस पसीना पसीना हो गया। वह बड़ा डर गया। "जब मैं इससे पीछा नहीं छुड़ा सकता, जब तक यह स्वयं अपनी मरजी पर न चला जाये।" राक्षस ने सोचा।

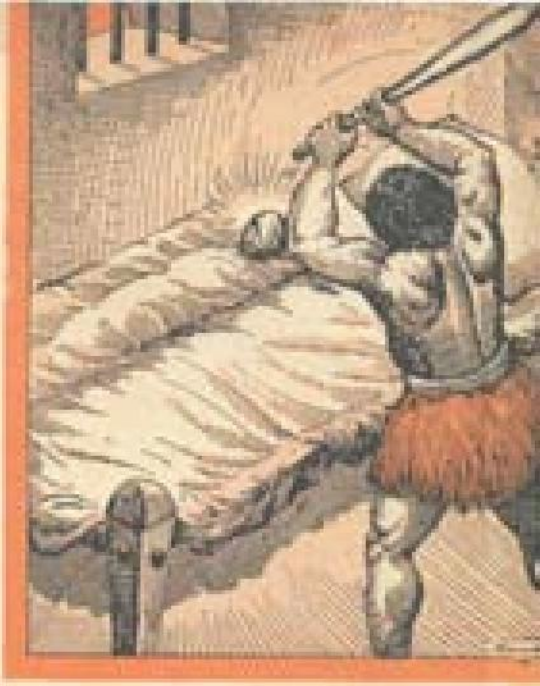

अगले दिन राक्षस ने रसोई शुरू करते हुए मोची से पूछा—"कल रात भी तुमने ठीक तरह नहीं खाया था। अब क्या खाओगे?"

"कल शाम मैंने दो बंगाली मैसे खा लिये थे, इसलिए भूख नहीं लगी थी। आज तुम जितना खाओगे, उतना मैं भी खाऊँगा। यही यही बाती!" मोची ने कहा।

राक्षस ने दो मटकों में चावल बनाये और एक में दाल डाल दिये, जब वे पक गये तो दोनों भोजन के लिए बैठे। चावल और दाल, उन्होंने आपस में बाँट

लिये। मोची ने अपने कुर्ते के नीचे एक कैंची रखी और उसमें वह चावल और शाक सरकाता गया और कुछ कुछ मुख में डालता गया।

दोनों का भोजन समाप्त हो गया। राक्षस को यह देख आश्चर्य हुआ कि जितना उसने खाया था, उतना ही उसके अतिथि ने भी खाया था।

"घर में ही बीता है। क्योंकि मैं चावल और शाक, बिना चबाये ही निगल गया था और तुमने चबाया था।" मोची ने कहा।

"यह सब जब तेरे पेट में है, तो मुझे कैसे मालूम होगा कि तुमने चबाकर खाया है या नहीं!" राक्षस ने कहा।

"चाहो, तो पेट काटकर दिखाता हूँ।" कहकर, मोची ने अपने कुर्ते के नीचे के थैले को ऊपर से नीचे तक काट दिया। चावल और पके बैंगन बाहर निकले।

"यदि तुमने भी मेरी तरह अपना पेट काटकर दिखाया, तो मान जाऊँगा कि तुम ही जीते हो।" मोची ने कहा।

राक्षस जोश में आ गया। उसने मोची के चाकू से अपना पेट फाड़ लिया और मर गया। मोची ने उसका सिर काटकर राजा को दिखाया। राजा ने उसके पराक्रम की प्रशंसा की और उसका अपनी लड़की से विवाह कर दिया।

उसके बाद, मोची के पराक्रम की और परीक्षा नहीं ली गई। जो राक्षस जानवरों का रहा करते थे, वे सचमुच की पराक्रम की कहानियाँ सुनकर, दूर पहाड़ों पर भाग गये। मोची राजा के बाद, राजा बना और सुख से उसने जीवन बिताया।

उत्तरकाण्ड

इस बार शुक, सोहपद नाम के दो मन्त्रियों को लेकर, कुबेर रावण के पास आया। वह क्रुद्ध था।

"अरे दुष्ट कहीं का, मैंने इतना कहकर देखा, पर तुमने न सुनी। अज्ञान के कारण जो विष पीता है, उसे तब तक ज्ञान नहीं आता, जब तक उसका फल नहीं चख लेता। तुम अपना अज्ञान नहीं समझ रहे हो, जब नरक अनुभव करोगे, तब तुम्हें मालूम होगा। अब तुम्हें दुष्टों में शामिल किया जा सकता है। तुम से बातें करना व्यर्थ है।" उसने कहा।

फिर दोनों भाइयों में द्वन्द्व युद्ध हुआ। कुबेर ने उन सब अस्त्रों को काट दिया, जो उस पर चलाये गये थे।

रावण फिर मायावी युद्ध में उतरा। कुबेर को उसके बहुत-से रूप दिखाई दिये। इस स्थिति में, रावण ने गदा से कुबेर के सिर पर ज़ोर से मारा और उसे नीचे गिरा दिया। घायल कुबेर को अधिदेवता मन्दर ले गये और वहाँ उसकी चिकित्सा की।

इस प्रकार रावण ने कुबेर को जीता। उसके पुष्पक विमान को उसने ले लिया। उस पर सवार होकर वह गया। वह

पर्वत सोने के रंग में इतना चमक रहा था कि दूसरा सूर्य-सा लगता था। जब पुष्पक उसके ऊपर आया, तो वह आकाश में अचानक रुक गया।

यह देख रावण ने अपने मन्त्रियों से पूछा—"जो विमान चालक के इच्छानुसार चलता है, क्यों वहाँ रुका होगा?"

इतने में ईश्वर के पार्षदवर और महा बलवान नन्दी ने रावण से कहा—"दशग्रीव, तुरंत पीछे हटो। इस पर्वत पर शिव क्रीड़ा कर रहे हैं। सुवर्ण, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस या कोई और प्राणी इस पर्वत पर नहीं जा सकते।"

यह सुनते ही रावण ने क्रोध में काँपते हुए कहा—"कौन है शंकर?" विमान से उतरकर, वह पर्वत के नीचे आया। वहाँ उसने शिव, कुछ दूरी पर त्रिशूल पकड़े दूसरे शिव की तरह खड़ा नन्दीश्वर दिखाई दिया। नन्दीश्वर का वानर मुख देखकर, रावण मेघ की तरह गरजा।

नन्दी ने रावण की हँसी पर क्रुद्ध होकर, कहा—"तुम मेरा वानर मुँह देखकर हँसे हो, इसलिए मेरे ही रूपवाले, मेरे समान शक्तिवाले वानर, तुम्हारा और तुम्हारे वंश को निर्मूल कर देंगे।"

रावण ने बिना परवाह किये, पर्वत के पास जाकर नन्दी से कहा—"मैं इस पर्वत का ही जड़ समेत कर देता हूँ, जिसने मेरे विमान को रोका है, जाकर वह कहो जानता कि मैं कितना शक्तिवर हूँ।" उसने पर्वत के नीचे अपना हाथ रखकर उसे उठाया। पर्वत हिल हिलाकर उठने लगा।

शिव यह सब देखकर हँसा। उसने अपने पैर के अंगूठे से पर्वत को कुछ

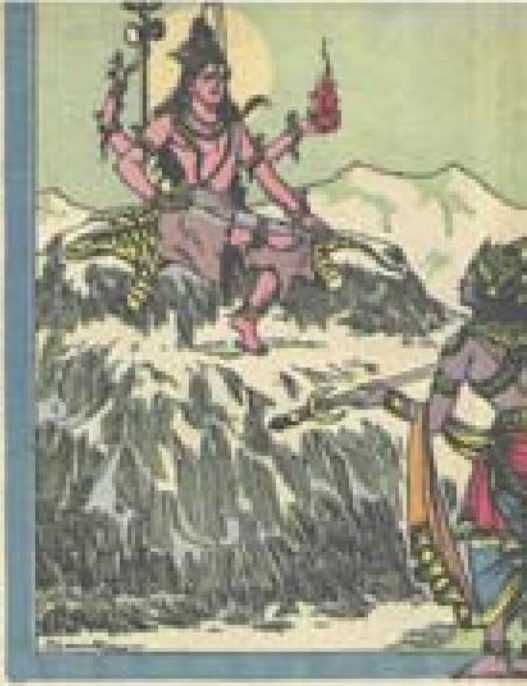

दबाया, इससे राक्षस की अंगुलियां पर्वत के नीचे दब गयीं। इस दर्द के कारण, राक्षस और क्रुद्ध हो उठा।

राक्षस के मन्त्री हैरान हो गये। उन्होंने राक्षस से कहा—"राजा, शंकर को सन्तुष्ट करो। शिवाय उनके कोई और शरण नहीं है। उनका स्तोत्र करो।" राक्षस दर्द के मारे कराहता उनका स्तोत्र करने लगा।

आखिर शिव ने कृपा की—राक्षस के हाथ को पहाड़ के नीचे से निकालकर कहा—"तुम्हारा वीर्य, पद, स्तोत्र सुनकर मैं सन्तुष्ट हूँ। जब तुम्हारा हाथ दब गया था, तब तुमने जो भयंकर आवाज़ की थी, उसे सुन, तुम्हारा राक्षस नाम सार्थक साबित होता है। अब तुम जहाँ चाहो, चले जाओ।"

तब राक्षस ने कहा—"महादेव, यदि तुम मुझसे सन्तुष्ट हो, तो जो मैं माँगूँ, वह दो। मुझे पहिले ही वर प्राप्त है कि देवता आदि से मैं न मारा जाऊँ। छोटे मोटे मनुष्यों की मेरे सामने कोई गिनती नहीं है। ब्रह्मा ने मुझे दीर्घ आयु दे दी रखी है। मैं आप से बाकी आयु और एक आयुध माँगता हूँ। कृपा करके मुझे वह दीजिये।"

शिव ने राक्षस को शेष आयु और चन्द्रहास नामक खड्ग देते हुए कहा—"इस खड्ग का कभी अपमान न करना। जब इसका अपमान होगा, उस दिन निश्चय ही वह मेरे पास आ जायेगा।"

इस प्रकार शिव से वर प्राप्त करके, राक्षस का मान रखकर, वह दक्षणीय पुष्पक विमान पर सवार होकर सारी भूमि में घूमता रहा और वीर राजाओं को तंग करने लगा।

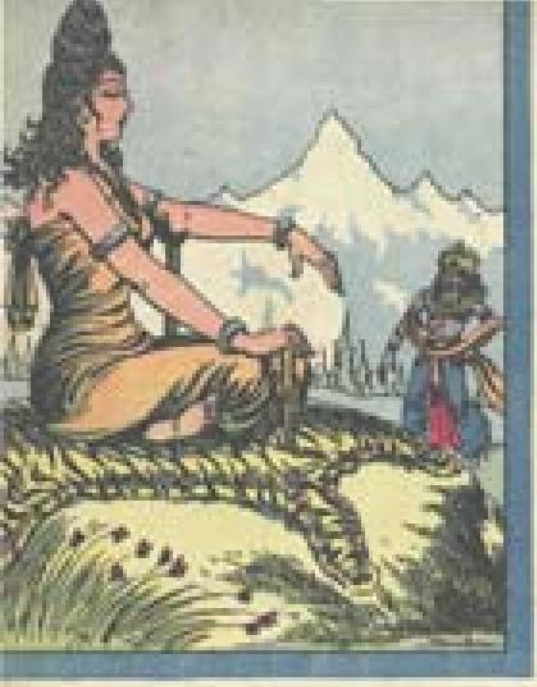

पराक्रमी उससे युद्ध करते नष्ट हो गये। समझदार यह सोचकर कि हम उसे जीत न सकेंगे, हार मानकर, उसके आधीन हो गये।

इस प्रकार घूमता फिरता, रावण एक बार हिमालय गया। उसने वहाँ एक अनोखी सुन्दर स्त्री देखी। वह ऋषियों की तरह वल्कल पहिनकर, तपस्या कर रही थी। रावण उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया—उसने उससे पूँछा—"सुन्दरी, तुम इस यौवन में क्यों तपस्या कर रही हो! तुम्हारा सौन्दर्य देखकर, पुरुष मुग्ध हो जायेंगे न! किस कारण से तुमने यह कठिन व्रत शुरु किया है?"

उसने अपना वृत्तान्त रावण को यूँ बताया—"बृहस्पति का लड़का कुशध्वज मेरा पिता है। मेरा नाम वेदवति है। अनेक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षसों ने मुझसे विवाह करना चाहा पर मेरे पिता माने नहीं—चूँकि वे विष्णु को ही अपना दामाद बनाना चाहते थे। यह सुनकर दम्भ नाम के राक्षस ने, मेरे पिता जब सो रहे थे, उनको मार दिया। मेरी माँ उनके साथ सती हो गई। मैं अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए, मन में विष्णु को ही अपना पति मानकर यहाँ तपस्या कर रही हूँ। समझे! इसलिए रावण अब तुम जा सकते हो।"

यह सुन रावण बड़ा क्रुद्ध हो उठा। उसने विमान से उतरकर, आकर पूछा—"लगता है, घमंड के कारण तुम्हारा मन बिगड़ गया है। नहीं, तो क्यों तुम त्रिलोक सुन्दरी होकर, अपना यौवन यूँ व्यर्थ कर रही हो! मैं दशग्रीव हूँ। लंकाधिपति हूँ। मेरी पत्नी बनकर समस्त भोगों का तुम आनन्द उठाओ। कौन है विष्णु! जो

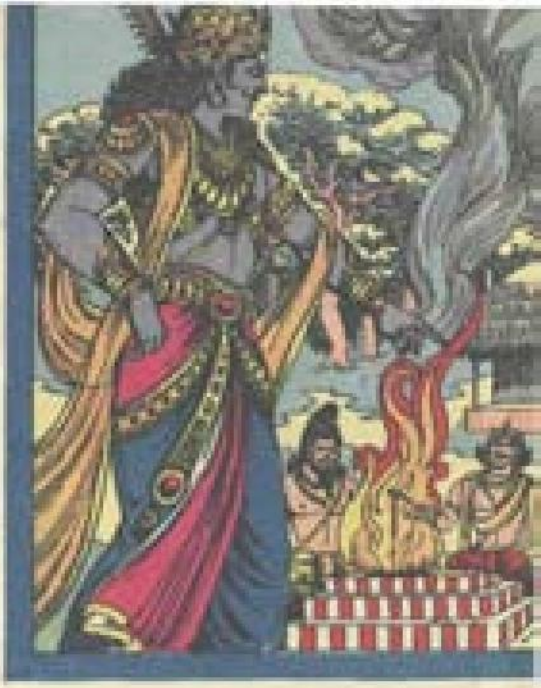

आज बल और तपस्या मुझ में है, क्या उसमें है ! सोच लो।"

"यदि तुम में कुछ भी बुद्धि होती, तो तुम विष्णु के बारे में यह नहीं कहते !" वेदवती ने कहा।

तुरत रावण ने उसके बाल पकड़ लिये। वेदवती ने क्रोध में अपने हाथों को तलवार बना लिया और अपने बालों को काट लिया। उसकी क्रोधाग्नि इस तरह प्रज्वलित हुई, मानो रावण उसमें भस्म हो जायेगा। उसने रावण से कहा—"तुमसे अपमानित होकर, अब मैं जीवित नहीं रहूँगी। इस अग्नि में गिरकर प्राण छोड़कर, अगले जन्म में पद्मिनी बनकर पैदा होऊँगी।"

वह फिर ज्वाल में कूद पड़ी। वह वेदवती ही सीता के रूप में पैदा हुई। जनक के घर बड़ी हुई। राम की पत्नी बनी। राम के बल के कारण, रावण की मृत्यु का कारण बनी।

वेदवती के अग्नि में आहुति हो जाने के बाद, रावण फिर पुष्पक विमान में आया। लोक संचार करता वहाँ पहुँचा, जहाँ मरुत महाराज देवताओं को रखकर यज्ञ करवा रहे थे।

बृहस्पति का भाई संवर्त यज्ञ करा रहा था। रावण को देखते ही, वहाँ के दिक्पालक भयभीत होकर, नये नये रूप धारण करने लगे। इन्द्र मोर हो गया। यम कौआ, कुबेर गिरगिट और वरुण हंस बन गया। बाकी देवताओं ने भी तरह तरह के जन्तुओं का रूप ले लिया।

इतने में रावण निस्संकोच यज्ञ वाटिका में आया। मरुत को देखकर उसने कहा—"युद्ध करोगे ! या हार मानते हो !"

"तुम कौन हो !" मरुत ने रावण से पूछा।

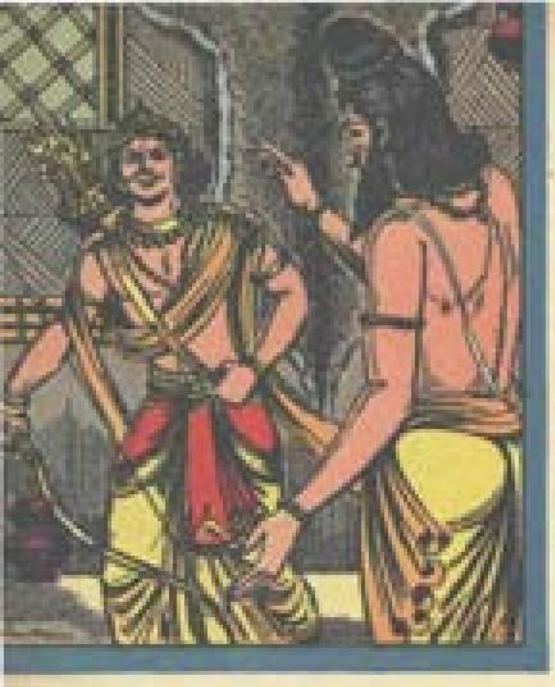

रावण ने ज़ोर से हँसकर कहा—"वाह, रावण को भी तुम नहीं पहिचानते! मैं नहीं सोचता कि तीनों लोकों में, कोई दूसरा ऐसा होगा, जिसने मेरे बल पराक्रम के बारे में न सुना हो। मैंने अपने भाई को डराकर, यह सिंहासन ले लिया है।"

यह सुन, मरुत ने क्रुद्ध होकर कहा—"तुम भी कितने बड़े हो कि पिता जैसे भाई को जीता! इस तरह की दुष्टता करके ऊपर से गर्व भी करते हो! बोल ठहरो। मैं अपने बाणों से तुम्हारे प्राण लेता हूँ। तुम्हारा घमंड चूर करता हूँ।" यह कहकर अपने धनुष बाण ले आया।

तब मरुत महाराजा को, संवर्त ने रोकते हुए कहा—"राजन्, जल्दी न करो। जो मैं कहूँ, उसे सुनो। इस महेश्वर यज्ञ में कोई विघ्न हुआ, तो वंश का नाश हो जायेगा। आप यज्ञ दीक्षा में हैं, आपको क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। नहीं नहीं, युद्ध में आप इस रावण को कैसे जीत सकोगे! यह दुर्जेय है।"

गुरु की बात सुनकर, मरुत धनुष बाण छोड़कर फिर यज्ञ करने लगा। यह देख रावण का मन्त्री शुक सन्तोष से चिल्लाने लगा—"रावण की जय, रावण की जय" रावण वाटिका के ऋषियों को खाकर, सन्तुष्ट होकर, अपने रास्ते चला गया।

फिर दिग्पालकों ने अपने असली रूप धारण किये। जिन जिनका उन्होंने रूप रखा था, उन उनको, नकल नकल उन्होंने कर दिये। उससे पहिले घोर करते हुआ करते थे इन्द्र ने उनको कई रंगों का, अपने हजार आँखों को, उनकी पूँछ के रंगों में जकड़कर करके, उनको सर्व मय से

युद्ध करके, इन्द्र की जेती हुई गायों, उनको लौटाने करे, यह वर दिया।

उसी प्रकार वरुण ने वर दिया कि कौओं को कोई रोग न हो। उनकी स्वाभाविक रूप से मृत्यु न हो। यदि कौओं का पेट भरे, तो उसके लोक में रहनेवाले पितरों का पेट भरा समझा जाये।

वरुण ने हंसों को लाल-सी देह कान्ति तक जीवन और अत्यन्त सुखमय जीवन दिया और कुबेर ने लिलिटों को सुवर्ण वर्ण दिया।

रावण ने सारा संसार घूमते घूमते जैसे कि मरुत महाराजा से युद्ध का और बड़े-बड़े राजाओं से भी युद्ध का—"मुझसे युद्ध करते हो या मानते हो कि हार गये हो?" दुष्यन्त, सुरथ, गाधीगज, पुरुरव आदि राजाओं ने रावण से हार मान ली। अयोध्या के राजा, अनरण्य ने रावण को युद्ध के लिए आमन्त्रित किया। जो युद्ध हुआ, उसमें अनरण्य की सेनायें युद्ध में नष्ट हो गईं। इन्द्र युद्ध में अनरण्य के बाण, रावण का कुछ न बिगाड़ सके। रावण ने जब अपना हाथ सिर पर रखा, तो अनरण्य रथ से नीचे गिर गया। बाण छोड़ते हुए उसने शाप दिया कि इक्ष्वाकु वंश में पैदा होनेवाले के हाथ ही वह मारा जायेगा।

रावण इस प्रकार गगन विहार करता, मानव जाति को सताता जा रहा था कि उसको पुष्पक विमान के सामने नारद महामुनि वेगों के ऊपर से चलता जाता दिखाई दिया। दोनों रुक कर बातें करने लगे।

"रावण, तुम्हारे बल पराक्रम को देख कर, मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ। पर एक बात मुझे नहीं जंची। तुम क्यों, जो देवताओं

से भी नहीं मारे जा सकते, मानवों पर अपना वश दिखा रहे हो! मानव कई व्यसनों के कारण, रोग और क्षय में आनेवाले वार्धक्य के कारण तरह तरह से दुःखी होते हैं, कष्ट उठाते हैं, ऐसों से क्या कोई वीर युद्ध करेगा! उनको मारने में क्या बड़प्पन है! उन सबको तम एक तरह से मार ही रहा है। चाहो, तो उस यम से युद्ध करो। उसे मारो। यम को मार दिया, तो समझ लो कि सारा परलोक ही जीत लिया है!" नारद ने कहा।

"नारद मैं पहिले पाताल, फिर स्वर्ग को जीतकर तीनों लोकों को स्वाधीन करके, फिर समुद्र को मथकर, अमृत पाने के प्रयत्न में हूँ।" रावण ने कहा।

"अरे पास के परलोक को छोड़कर और कहीं, क्यों जाना चाहते हो! वह तुम्हारे रास्ते में ही है!" नारद ने कहा। रावण हूँ हँसा, जैसे मजाक कर गई हो। "वाह, तुमने खूब कहा। अच्छी बात बतायी, मैं यमलोक जा रहा हूँ। अपनी दिग्पालकों को जीतने के लिए मैंने पहिले ही प्रतिज्ञा की है। अब मैं जाकर, समस्त प्राणियों को मृत्यु का भय दिखानेवाले यम के साथ लूँगा।" कहकर, उसने नारद को नमस्कार किया। उससे विदा लेकर, अपने मन्त्रियों के साथ दक्षिण की ओर चला गया।

सब प्राणियों को मारनेवाले यम की किस तरह मौत होगी, नारद कुछ न समझ सका। वह स्वयं अपनी आँखों उसने देखना चाहा कि रावण यम को कैसे जीतता है, इसलिए वह भी यम नगरी की ओर चल पड़ा।

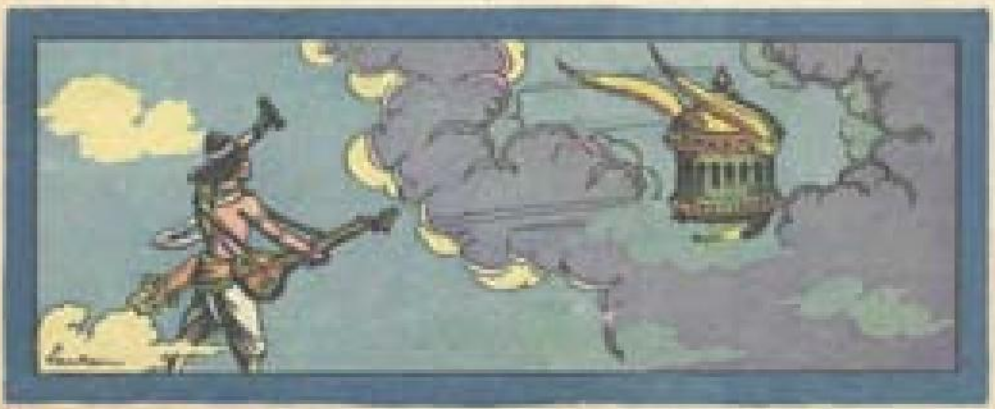

गरुड़ का गर्वभंग

देवेन्द्र के सारथी, अत्यन्त निकट का मित्र मातली के सुधर्मा नाम की पत्नी थी। उनके बहुत दिनों बाद, एक लड़की हुई। उसका नाम सुधर्मेशी था। उसको उन्होंने बड़े लाड़ प्यार से पाला पोसा। सुधर्मेशी बढ़कर बड़ी हुई, तीनों लोकों में उस जैसी सुन्दरी, स्वरूप नहीं थी, ऐसा कहा जाता था। जब वह विवाह के योग्य हुई, तो मातली चिन्तित रहने लगा। क्योंकि सुधर्मेशी के योग्य वर, मानुषी आदमियों में, या देवताओं में, या ऋषियों में कहीं कोई न था।

अन्त में मातली इतना ऊब गया कि उसने अपनी पत्नी सुधर्मा से कहा—"देखें, लड़की के लायक रूपवान, गुणवान, कहीं पाताल में मिल जावे।" यह कहकर वह पाताल लोक की ओर निकल पड़ा।

उसे रास्ते में नारद मिला। कुशल प्रश्नों के बाद—"कहाँ जा रहे हैं! अपने काम पर! या इन्द्र के काम पर!" उसने पूछा।

मातली ने अपने काम के बारे में नारद से कहा—"मैं वरुण को देखकर, पाताल में घूमने जा रहा हूँ।"

"और क्या! मैं भी वरुण को देखने जा रहा हूँ। चलो, मिलकर चलें।" नारद ने कहा।

वरुण ने नारद और मातली का बड़ा स्वागत किया। जिस प्रकार का स्वागत इन्द्र का किया जाता था, उसी प्रकार मातली का किया गया। फिर वे वरुण की

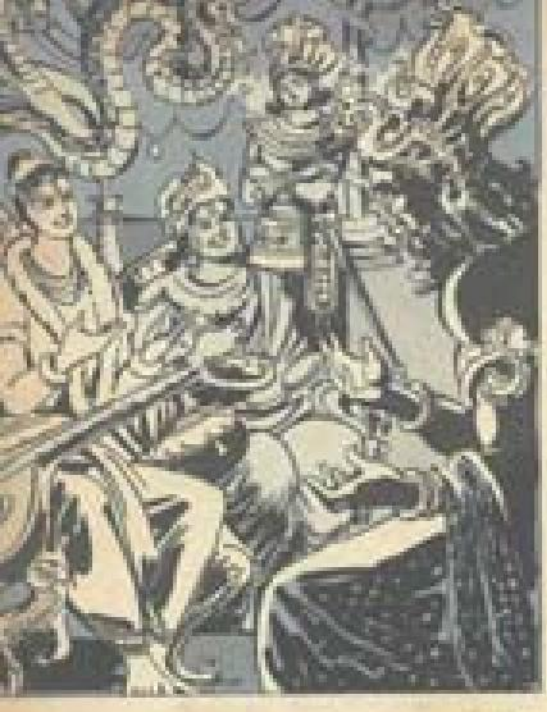

अनुमति पर दशरथ के विविध प्रान्तों में घूमने निकल गये।

एक जगह हिरण्यपुर नाम का महानगर था। वह धन का बनाया हुआ था। वे राक्षस, जो और लोकों में हरा दिये गये थे, वहाँ रहा करते थे। ऐसी जगह जमाई लोगना, मातली को ठीक नहीं लगा।

फिर वे दोनों नागलोक में भोगवती पुर गये। यह नगर अमरावती से कोई कम न था। इस नगर में वासुकी राजा था। शेष आदि कई महासर्प वहाँ रहा करते थे। उस नगर में घूमते घूमते एक सुन्दर युवक मातली को दिखाई दिया। मातली ने नारद से कहा—"देवर्षी, वह लड़का कौन है! उसके माँ बाप कौन हैं! वह मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है।"

"इसका नाम सुमुख है। इसका वंश ऐरावत है। अर्वक इसके बाबा हैं। इसके पिता को, जिसका नाम चिक्षुर है, अभी अभी गरुडमन्त ने मारा है।" नारद ने कहा।

नारद, मातली को साथ लेकर अर्वक के पास गये—"ये अपनी लड़की के लिए वर खोजते खोजते, तीनों लोक हो आये हैं। आखिर वे तुम्हारे पोते को देखकर, अपना जमाई बनाना चाहते हैं। इसकी लड़की गुणकेशी का विवाह अगर तुमने अपने पोते से कर दिया, तो बड़ा अच्छा होगा।"

इस पर अर्वक ने कहा—"तुमने बात तो बड़ी अच्छी कही है। परन्तु मुझे सन्तोष नहीं है। क्योंकि मेरे पोते पर बड़ी विपत्ति आनेवाली है। गरुडमन्त कुछ दिन पहिले ही इसके पिता को खा गया था। अगले महीने इसे खाने की कसम खाकर गया है। क्या आप गरुडमन्त का बल नहीं जानते!"

यह सुन मातली ने कहा—"नागराज! क्योंकि मैंने आपके पोते को, अपना जमाई चुना है। इसलिए उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी भी मुझ पर है। आपने यदि सुमुख को मेरे साथ भेजा, तो मैं उसका देवेन्द्र से परिचय करा दूँगा और जो कुछ करना कराना होगा, मैं करवा दूँगा। आप चिन्ता न कीजिये।"

अर्थक अपने पोते को, मातली के साथ भेजने के लिए मान गया। मातली, नारद, सुमुख, मिलकर देवलोक वापिस आ गये। वे इन्द्र के सामने गये। वे जब पहुँचे तो विष्णु और इन्द्र सभा लगा रहे थे। मातली ने विष्णु से सब कुछ कहकर देखा। विष्णु ने सुनकर इन्द्र से कहा—"इन्द्र, तुम सुमुख को अमृत देकर, उसको अमर बना दो।"

इन्द्र यह करने के लिए जरा हिचकाया। दराकमी गरुत्मन से उसने वैर न ठानना चाहा। इन्द्र ने विष्णु से कहा—"यह अमृत तुम ही क्यों नहीं दे देते!"

"तुम सब लोकों के अधिपति हो, तुम्हें कौन रोकनेवाला है! अमृत तुम ही दे दो।" विष्णु ने कहा।

फिर भी इन्द्र ने, सुमुख को अमृत देने का साहस न किया। उसे उसने फिर भी दीर्घायु दे दी। इस कारण सुमुख का गरुत्मन के प्रति भय जाता रहा। वह मातली की पुत्री से विवाह करके, अपने लोक चला गया।

यह सुनकर कि मातली और नारद की इच्छा पर इन्द्र ने सुमुख को दीर्घायु दे दी थी, गरुत्मन तेजी से इन्द्र के पास आया और जोर से चिल्लाने लगा—"क्या है इन्द्र! क्या मेरे सुख का और छीनोगे! ब्रह्मा ने जो मुझे आहार के रूप में दिया है,

उसको लेनेवाले तुम कौन होते हो ! मैंने उस सुमुख को मारकर खाने की प्रतिज्ञा भी की है। संसार में, मुझ-सा बलशाली कोई नहीं है। एक पंख से तुम्हें आसानी से उठा सकता हूँ। क्योंकि विष्णु मुझ पर सवारी करते हैं, शायद इसलिए मैं तुम्हारी नजर में छोटा हो गया हूँ। इस विष्णु के कारण मेरी धाक चली गई है।" उसने खूब बुरा भला कहा।

उसकी अनर्गल बातें सुन, विष्णु ने कहा—"क्यों, गरुड़ तुम में बुद्धि नहीं है! तुम बहुत दुर्बल हो, और मेरे सामने ही इतनी शेखियाँ मार रहे हो। यह कहना कि तुम मुझे ढो रहे हो, बिल्कुल गलत और झूठ है। मैं अपने को तो ढो ही रहा हूँ, साथ तुम्हें भी ढो रहा हूँ। यदि तुम्हें विश्वास न हो, तो मेरा बाँया हाथ उठाकर दिखाओ। बस।" कहते हुए उसने अपना बाँया हाथ गरुडमन्त की पीठ पर रखा।

उस भार के कारण गरुडमन्त दब-सा गया। उसे ऐसा लगा, जैसे तीनों लोक उस पर टूट गये हों। वह थर थर काँपने लगा।

छटपटाते हुए गरुडमन्त ने कहा—"मैं मर रहा हूँ। अज्ञान के कारण मैं शेखियाँ मार बैठा। मुझे इसी बात का गर्व था कि मैं तुम्हें ढो रहा हूँ। अनुग्रह करो। रक्षा करो।"

विष्णु ने कृपा करते हुए कहा—"कभी ऐसी बकवास न करना। इन्द्र के वज्र का गौरव करो। सुमुख से मैत्री के साथ रहो। तुम्हारा गर्व भंग हो गया है, यह ही उसकी शाश्वत निशानी है।

तब से गरुड़ हमेशा सर्प को अपने साथ रखता आया है।

४८. डरेयस का प्रस्तर इतिहास

हमारे देश में जब बुद्ध अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे, डरेयस नामक राजा ने, फारसी साम्राज्य स्थापित करके "बगस्तान" (भगवान का स्थान) में अपने इतिहास को ३०० फीट ऊँचे पहाड़ पर तीन भाषाओं में खुदवाया। ये (चित्र देखिये) मनुष्य जहाँ तक जा सकते हैं, उससे १०० फीट ऊँचाई पर है।

इनमें कई मूर्तियों में यह दिखाया गया है कि कैसे डरेयस ने अपने शत्रुओं को पकड़कर कैद किया था। डरेयस (बायें से तीसरा) अपने पैर के नीचे, अपने मुख्य शत्रु को कुचल रहा है। बाकी के हाथ बाँध दिये गये हैं। उनके गलों में रस्सी बाँधकर उनको उसके सामने खड़ा कर दिया गया है। इनके ऊपर डेरियस के इष्ट देवता "अहुर मज्द" का है। वह डेरियस को हाथ उठाकर आशीर्वाद दे रहा है। इन शत्रुओं को जीतकर ५२१ ई. पू. में डरेयस राजा बना।

२,५०० साल पहिले डरेयस ने अपनी कथा तीन भाषाओं में अर्थात् फारसी, बाबिलोनियन, एलमैट भाषाओं में खुदवाई। पहिली भाषा में ५१५ पंक्तियाँ, दूसरी भाषा में १४१ पंक्तियाँ, और तीसरी में ६५० पंक्तियाँ हैं। इनको पूरी तरह १९५० में ही जाना जाया जा सका।

Photo by Prabhakar Mahadik

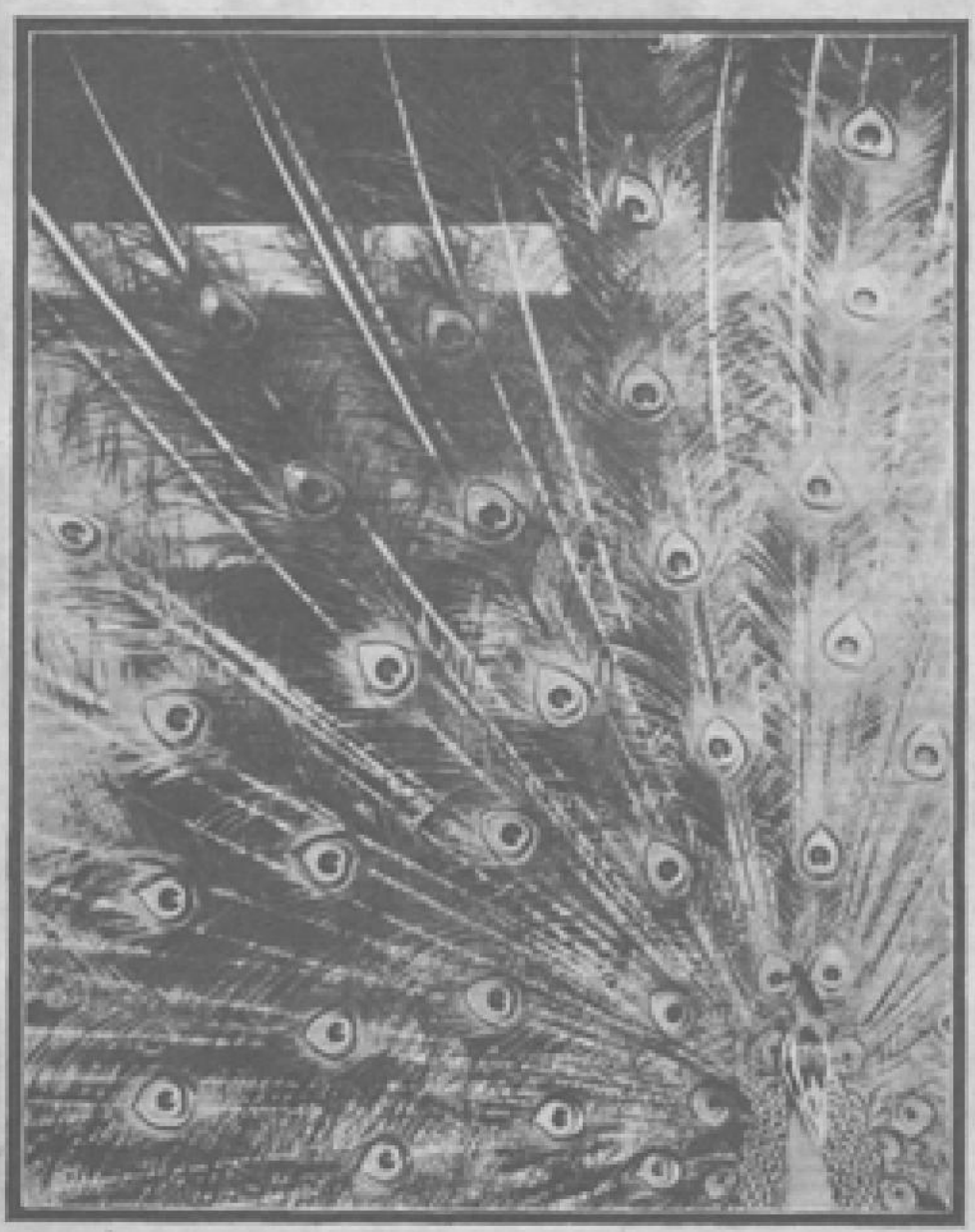

तुरन्त
परिस्थितियाँ

पंखों की सुन्दरता प्यारी !

लेखक :
कृष्णलाल बाजी - धानेराव

Photo by B. Bhansali

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

बालों की सजावट न्यारी !!

प्रेषक :
कृपालाल माली - धाणेराव

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और पत्थर संक्षिप्त हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ दिसम्बर १९५५ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

दिसम्बर – प्रतियोगिता – फल

दिसम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके लेखक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : पंखों की सुन्दरता प्यारी !
दूसरा फ़ोटो : बालों की खूबसूरत न्यारी !!

लेखक : कृपालाल मालवी,
पो. पालेराव, एरे. धामना, जि. धार्सी (एमरजेन्स)

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Baruda Binding Works, 7 & 8 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

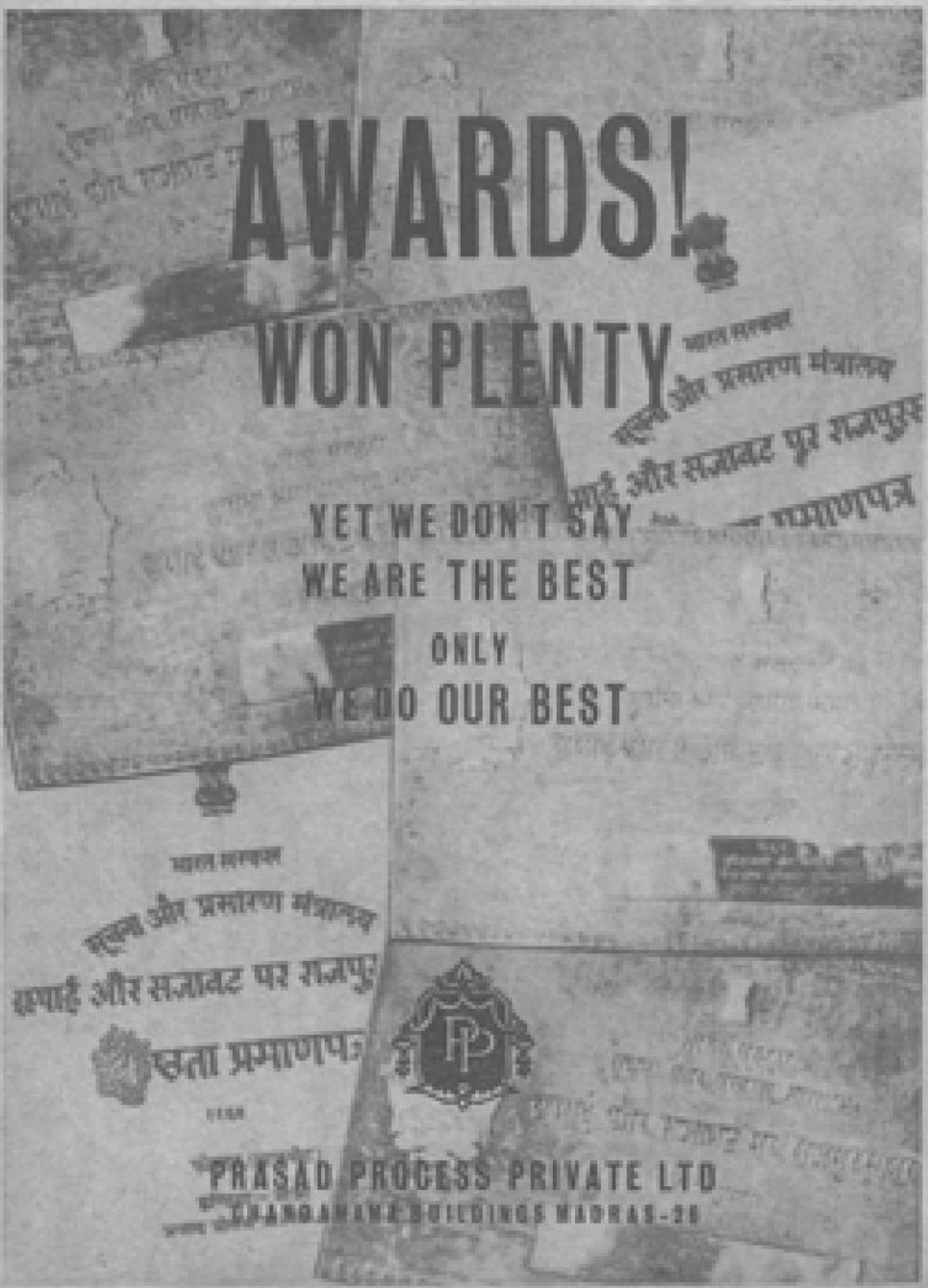
AWARDS!
WON PLENTY
YET WE DON'T SAY
WE ARE THE BEST
ONLY
WE DO OUR BEST
PRASAD PROCESS PRIVATE LTD